संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
१ जनवरी २०१३
वर्ष : २२ अंक : ७
(निरंतर अंक : २४१)
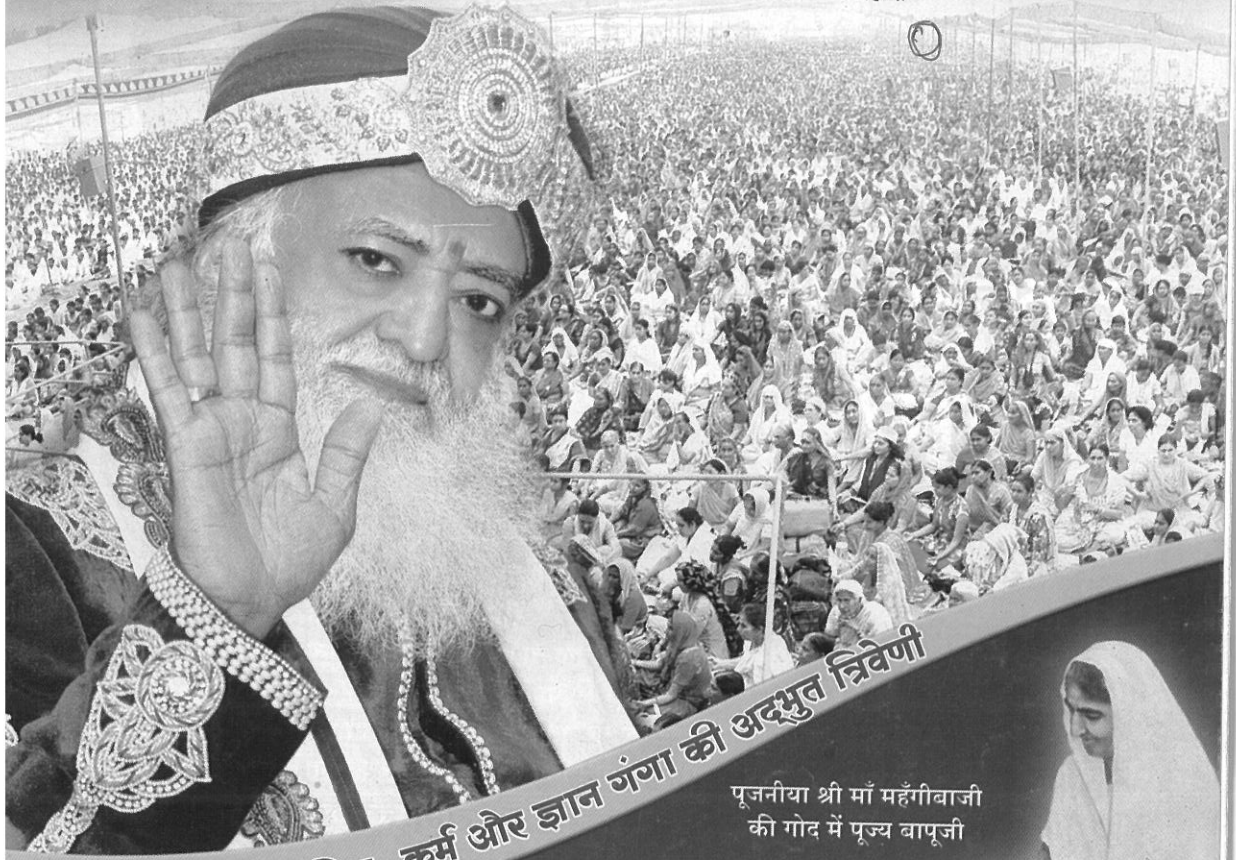
प्रयाग कुम्भ : भक्ति, कर्म और ज्ञान गंगा की अद्भुत त्रिवेणी

पूजनीया श्री माँ महँगीबाजी की गोद में पूज्य बापूजी

आओ मनायें १४ फरवरी को

मातृ-पितृ पूजन दिवस

''हिन्दू भी चाहते हैं, ईसाई भी चाहते हैं, यहूदी भी चाहते हैं, मुसलमान भी चाहते हैं कि हमारे बेटे-बेटी लोफर न हों। ऐसा कोई माँ-बाप नहीं चाहते कि हमारी संतानें लोफर हों, हमारे मुँह पर लात मारें, आवारा की नाईं भटकें। तो सभीकी भलाई का मैंने संकल्प किया है।'' - पूज्य बापूजी

पूज्य बापूजी एवं मातुश्री लक्ष्मीदेवी के श्रीचरणों में दंडवत् प्रणाम करते हुए नन्हे नारायण साँईं।
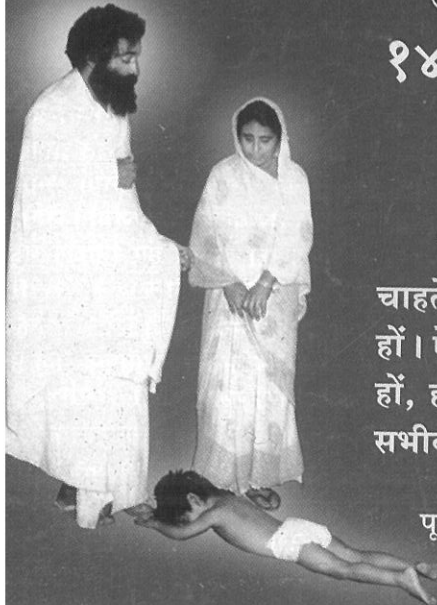
ऐसा कोई नाम याद करना चाहें जिनका सब कुछ दबंग हो तो जो नाम मुख में आता है, वह है – आध्यात्मिक गुरु पूज्य संत श्री आशारामजी बापू !

दबंग बापू
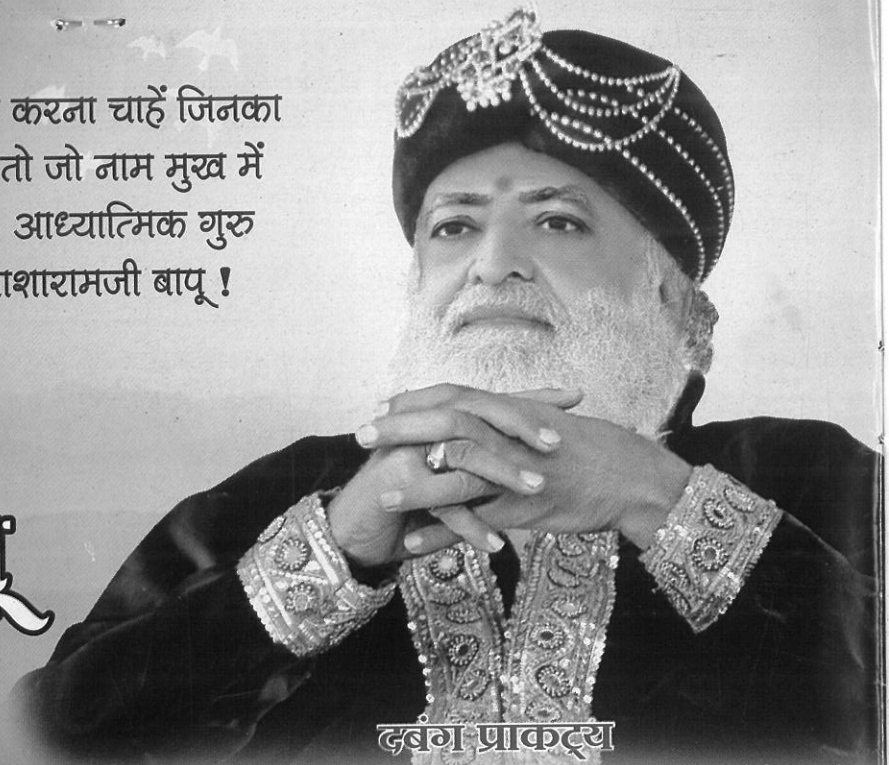
दबंग प्राकट्य

जन्म के बाद तो हर कोई खुशियाँ मनाता है, लेकिन बापूजी के धरती पर प्राकट्य से पहले ही एक अजनबी सौदागर सुंदर और विशाल झूला लेकर घर पर आ गया। बोला : ''आपके घर संत-पुरुष आनेवाले हैं।'' और खूब अनुनय-विनय करके भव्य झूला दे गया। है ना दबंग प्राकट्य !

दबंग बाल्यकाल

बाल्यावस्था में किसीने ''ऐ टेणी (ठिंगूजी) !'' कहकर बुलाया तो बालक आसुमल ने रोज पुलअप्स करके ४० दिनों में ही पीछे से जाकर उसके कंधे पर हाथ रखा : ''ऐ ! पहचाना ?'' वह व्यक्ति बोला : ''अरे भाईसाहब ! आप... आप... क्षमा करना !'' ऐसी दबंगई कि बोलती बंद !

दबंग युवावस्था

आपकी युवावस्था योग, ज्ञान, वैराग्य की दबंगई से सुशोभित रही। एक बार नदी-किनारे खाली बरामदे में रात्रि को ध्यानस्थ बैठे आपको चोर-डाकू समझकर मच्छीमारों का पूरा गाँव लाठियाँ, भाले, हथियारों से लैस होकर आपको घेर के खड़ा हो गया। लेकिन आप तो शांत भाव से भीड़ को चीरते हुए निकल पड़े, किसीकी हिम्मत नहीं कि निहत्थे आपको स्पर्श भी करता।

डीसा (गुज.) में बनास नदी के सुनसान तटवर्ती इलाके में एक शराब की भट्ठीवाले ने आपके गले पर धारिया (धारदार हथियार) रखा, बोला : ''खींचूँ ?'' ''तेरी मर्जी पूरण हो।''- यह उत्तर सुनकर वह गला काटनेवाला धारिया एक तरफ फेंका और शातिर, खूँखार व्यक्ति खुद चरणों में गिर पड़ा। वह अपराधी व्यक्ति और उसके साथी भी भक्तिभाववाले हो गये। कैसी दबंगई !

(शेष पृष्ठ २७ पर)
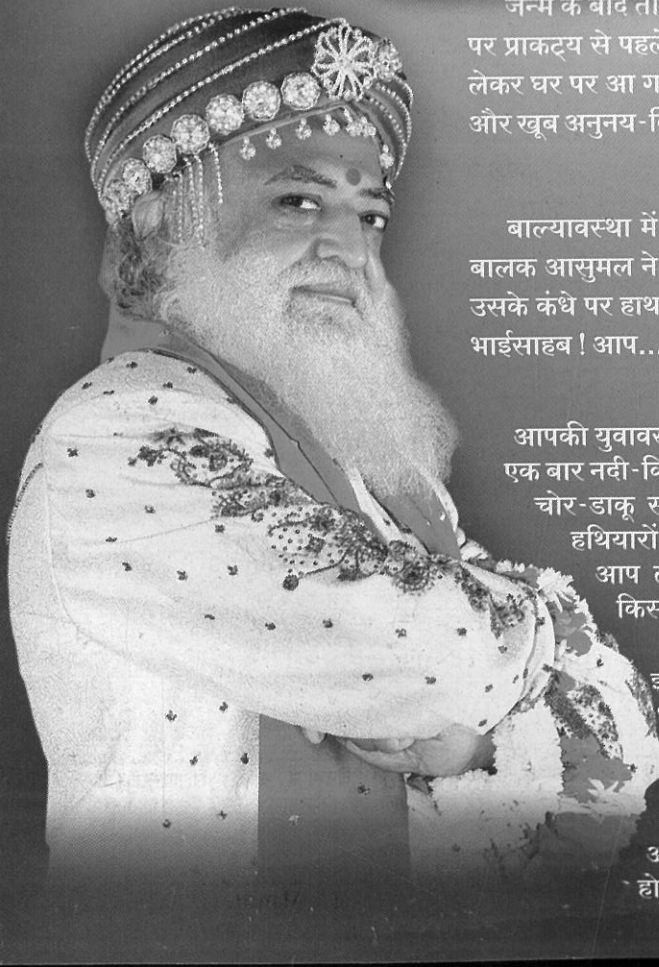
ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २२ अंक : ७
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २४१)
१ जनवरी २०१३ मूल्य : ₹ ६
पौष-माघ वि.सं. २०६९

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५
आजीवन	₹ ५००	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org
www.rishiprasad.org

इस अंक में...

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS		care WORLD	सत्संग टीवी	अध्यात्म टीवी	सत्य	दिशा	कलश	मंगलमय चैनल
रोज प्रातः ३, ५-३०, ७-३० बजे, रात्रि १० बजे व दोप. २-४० (केवल मंगल, गुरु, शनि)	रोज सुबह ९-४० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	रोज रात्रि १०-०० बजे	रोज शाम ४-०० बजे	रोज दोपहर २-०० बजे	रोज रात्रि ८-१५ बजे	रोज सुबह ६-३० बजे	www.ashram.org पर उपलब्ध

✻ 'A2Z चैनल' बिग टीवी (चैनल नं. ४२५) पर उपलब्ध है। ✻ 'आस्था चैनल' बिग टीवी (चैनल नं. ६५०) पर उपलब्ध है।
✻ 'दिशा चैनल' डिश टीवी (चैनल नं. ७५७), टाटा स्काई (चैनल नं. १८४) और डीडी डायरेक्ट (चैनल नं. १३) पर उपलब्ध है।
✻ 'कलश चैनल' डिश टीवी (चैनल नं. १५४०), डीडी डायरेक्ट (चैनल नं. ४३) और विडियोकान (चैनल नं. ६९५) पर उपलब्ध है।
✻ 'मंगलमय चैनल' इंटरनेट पर **www.ashram.org/live** लिंक पर उपलब्ध है।

सुंदर समाज के निर्माण का आह्वान : प्रेरणा सभा

विश्वमानव के कल्याण की दिव्य भावनाएँ सँजोनेवाली भारतीय संस्कृति आज भी आध्यात्मिकता में शिरोमणि है । इसे रक्षित-संवर्धित करनेवाले संत-महापुरुष आज भी भारतभूमि पर विराजमान हैं। इन्हीं संत-महापुरुषों की शरण लेकर भारतीय संस्कृति के दिव्य संस्कारों को अपना के देश-विदेश के लोग आनंद व शांति का अनुभव कर रहे हैं। लेकिन यह घोर विडम्बना है कि अपने ही देश में किशोर एवं युवा वर्ग ऐसे आत्मारामी महापुरुषों के सान्निध्य और भारतीय संस्कृति के दिव्य जीवन को छोड़कर पाश्चात्य कल्चर के अंधानुकरण से अशांत तथा दुराचार और एड्स का शिकार हो रहा है। भारतीय संस्कृति पर हो रहे कुठाराघात से व्यथित होकर लोकहितकारी महापुरुष पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने इस बुराई को मोड़कर समाज को सही दिशा देते हुए एक अच्छाई का सर्जन करने का संकल्प लिया है : 'वेलेंटाइन डे की गंदगी हमारे देश में न फैले इसलिए मैंने 'वेलेंटाइन डे' मनाने के बदले 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने का आह्वान किया है ।'

२८ विकसित देशों में हर वर्ष १३ से १९ साल की १२ लाख ५० हजार किशोरियाँ गर्भवती हो जाती हैं। उनमें से ५ लाख गर्भपात करा लेती हैं, बाकी ७ लाख ५० हजार कुँवारी माता बनकर नर्सिंग होम, सरकार एवं माँ-बाप पर बोझा बन जाती हैं अथवा वेश्यावृत्ति धारण कर लेती हैं। वेलेंटाइन डे - 'आई लव यू, आई लव यू...' ने तबाही मचा रखी है । इस तबाही से बचाने के लिए पूज्य बापूजी ने १४ फरवरी को 'बच्चे-बच्चियाँ माँ-बाप के साथ प्रेम-दिवस मनायें' यह अभियान चालू करवा दिया ।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का सिद्धांत सनातन है - समता, सबका मंगल सबका भला... इससे सभी जातियों-पार्टियों के लोग हृदयपूर्वक बापूजी को मानते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वर्ष २०१० में राम जन्मभूमि का निर्णय आने के कारण लगी १४४वीं कलम (जमाव निषेध) दरकिनार करते हुए कर्नाटक सरकार (भा.ज.पा.) व गोवा सरकार (कॉंग्रेस) ने सबका मंगल चाहनेवाले बापूजी का सत्संग सुसम्पन्न कराने में साथ-सहकार दिया । इसी प्रकार १५ अगस्त २०१२ को बरेली (उ.प्र.) में जहाँ साम्प्रदायिक तंगदिली के कारण कर्फ्यू था, बापूजी का सत्संग अवरोधरहित सम्पन्न हुआ क्योंकि मुलायम सिंह के सपूत अखिलेश यादव की सरकार भी बापूजी की विशालता और सबकी भलाई से भरे दिल को जानती है ।

रमन सिंह सरकार (छ.ग.) ने बापूजी के सर्वमांगल्यकारी प्रवचन सुनकर १२ फरवरी २०१२ को संकल्प लिया कि बच्चों को गुमराह करनेवाला, काम-विकार में गिरानेवाला वेलेंटाइन डे बच्चों को नहीं मनाने देंगे और विद्यालयों-महाविद्यालयों में 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाया जायेगा ।

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से ७ वर्षों से १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' भारतभर में एवं विदेशों में भी मनाया जा रहा है। इसे विश्वव्यापी बनाने के संकल्प की पूर्ति हेतु २७ नवम्बर को बड़ौदा और २९ नवम्बर को दिल्ली में विशाल 'प्रेरणा सभाओं' का आयोजन हुआ, जिनके माध्यम से काशी के जगद्गुरु शंकराचार्य, अखिल भारतीय संत समिति, अखिल भारतीय

अखाड़ा परिषद, अखिल भारतीय श्रीराम सेना, वारकरी सम्प्रदाय, हिन्दू जनजागृति समिति, वैदिक डिवाइन एसोसिएशन आदि के प्रमुख धर्माचार्यों, संतों तथा अन्य अनेक समाजसेवियों व गणमान्य सुप्रसिद्ध हस्तियों ने 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का हृदयपूर्वक समर्थन किया तथा इस दैवी कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए 'प्रेरणा सभाओं' के माध्यम से समाज को संदेश दिया।

श्री सुमेरुपीठ (काशी) के शंकराचार्य जगद्गुरु स्वामी नरेन्द्रानंद सरस्वतीजी : 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' की पावन परम्परा एवं इस 'प्रेरणा सभा' के आयोजन के सूत्रधार संत श्री आशाराम बापूजी ! जब-जब राष्ट्र में कुसंस्कृति पनपती है, बढ़ती है, ऐसी विषम परिस्थितियों में पूरी दुनिया को दिशा-दशा, गति देने के कार्य में... चाहे त्रेता का काल रहा हो, चाहे द्वापर या कलियुग का, उसमें संतों की अहम भूमिका रही है। जब भी विश्वपटल पर परिवर्तन का शंखनाद हुआ है उसमें संतों ने अपने तप, उपासना, आराधना व साधना की आहुति देकर जलते हुए अशांत समाज को शांति देने का कार्य किया है।

प्रेम का मतलब वासना नहीं होता लेकिन आज प्रेम का नाम लेकर वासनात्मक दृष्टि से १४ फरवरी का दिन 'वेलेंटाइन डे' के रूप में घृणित ढंग से मनाया जा रहा है। माता-पिता का पूजन यह हमारी वैदिक संस्कृति का मेरुदंड है, जिसको संत श्री आशारामजी बापू कहते हैं 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में मनाना चाहिए। आप यह संकल्प लें कि १४ फरवरी को पूरे १३५ करोड़ परिवारों में माता-पिता का पूजन-वंदन करेंगे। अगर मुसलमान का लड़का अब्बाजान को सलाम करेगा तो उसका भी कल्याण हो जायेगा।

'वेलेंटाइन डे' की कुसंस्कृति के माध्यम से जो अनीति फैली है, उसीका दुष्परिणाम विश्व में आज 'एड्स' के रूप में फैल रहा है। हम अपनी संस्कृति से शिक्षा लेकर इस 'प्रेरणा सभा' के माध्यम से बापूजी का संदेश पूरे राष्ट्र में फैलायेंगे। हमारे अंदर माता-पिता के प्रति आदरभाव, गुरु और आचार्य के प्रति श्रद्धाभाव होगा तो निश्चित ही २१वीं सदी में भारत पूरी दुनिया को अस्त्र-शस्त्र या धन के बल पर नहीं, ज्ञान और चरित्र के बल पर जीत लेगा। भारत की नींव है चरित्र, जिसे आज के युवक और युवतियाँ कुसंस्कारों व अपसंस्कृति में पड़कर नष्ट कर रहे हैं। इसके लिए आवश्यक है कि बापूजी की पुस्तक 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' एवं नैतिक शिक्षा का पाठ भारत में हर व्यक्ति को अनिवार्य होना चाहिए। 'शिक्षा मंत्रालय' और 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' के माध्यम से 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' 'राष्ट्रीय पर्व' के रूप में घोषित होना चाहिए। और वह दिन दूर नहीं होगा जब हम लोग सरकार को इसके लिए बाध्य करेंगे।

वैसे तो हम शांति के पक्षधर हैं, शांति हमारी रगों में है लेकिन आज सत्ता की गलत नीतियों के चलते और मीडिया की मिलीभगत से कितने ही संतों को बदनाम करने का षड्यंत्र रचा जा रहा है। उनके उस षड्यंत्र का पर्दाफाश करने के लिए संतों और जनता को संगठित होना पड़ेगा।

अगर इस भारतभूमि पर कोई अनैतिक कृत्य होता है और आप देखते रहते हो तो यह आपकी सबसे बड़ी नाकामी है। इसलिए हर व्यक्ति प्रतिदिन एक घंटे का समय संस्कृति रक्षा - राष्ट्र रक्षा के लिए दे, राष्ट्र के विकास के लिए दे, राष्ट्र की कुरीतियों के उन्मूलन के लिए दे। और जिस दिन हर व्यक्ति एक घंटा चिंतन करेगा और सभी परस्पर एकजुट होकर नकारात्मक प्रवृत्ति के लोगों के साथ बैठकर संवाद करोगे और उनके मस्तक

के कचरे को निकालकर दफन कर दोगे, उसी दिन भारत विश्वगुरु के रूप में पुनः उभर आयेगा। इसके लिए सबको सामूहिक प्रयास करने की जरूरत है। संतों के आदेशों-निर्देशों, मूल्यों-मान्यताओं को अगर आप अपने जीवन में उतारेंगे और यह जो १४ फरवरी का दिन है, उसे 'माता-पिता पूजन दिवस' के रूप में हर ग्राम स्तर, खंड स्तर, तहसील, जिला, मंडल और प्रदेश स्तर पर यदि हम लागू करेंगे तो केन्द्रीय स्तर पर भी लागू करने के लिए सरकार बाध्य होगी।

जो हमारी संस्कृति, आस्था के केन्द्रों पर प्रहार करते हैं उनको रोकने के लिए **उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।...** उठिये, जागिये और जगाने के लिए इस समय में भीष्म पितामह की भूमिका में संत आशारामजी बापू आपके साथ हैं। उनके आदेशों-निर्देशों को सभी शिरोधार्य करें तो वह दिन दूर नहीं कि भारत अपने खोये हुए गौरव, मान-सम्मान-स्वाभिमान को पुनः प्राप्त करेगा।

'अखिल भारतीय संत समिति' के राष्ट्रीय महामंत्री महामंडलेश्वर श्री देवेन्द्रानंद गिरिजी : जिनके रोम-रोम से विश्वबंधुत्व, विश्वशांति, **'सर्वभूतहितेरतः'** की महक फैलती है, उन परम पूज्य बापूजी के पास बैठने के बाद जो अनुभूति हुई और प्रेम, करुणा, वात्सल्य की वे जो साक्षात् मूर्ति दिखाई दिये, उन पूज्य बापूजी को मैं वंदन करता हूँ।

'मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव।' को पुनर्जागृत करने की यह जो परम्परा बापूजी ने आरम्भ की, उसके लिए मैं महाराजजी को धन्यवाद देता हूँ। जो बापूजी की शिक्षा है, ऋषियों की, हमारे गुरुओं की शिक्षा है, हमारी मर्यादा और परम्पराओं की जो शिक्षा है, हम उसके ऊपर दृढ़ता से चलें।

पूज्य बापूजी ! इलाही मेरी नजरों में
वो तासीर आ जाय।
जहाँ भी देखूँ, जिसे भी देखूँ,
तेरी तस्वीर नजर आ जाय॥

'विश्व हिन्दू परिषद' के केन्द्रीय मार्गदर्शक श्री अतुलकृष्णजी महाराज : परम पूज्य प्रातःस्मरणीय बापूजी 'वेलेंटाइन डे' को जो 'विनाश डे' कहा करते हैं, यह बिल्कुल सत्य है। यह हमारे परिवार, हमारी संस्कृति को तोड़ रहा है।

पूज्य बापूजी ने यह जो बीड़ा उठाया है और हम सबके हाथों में जागरूकता की एक मशाल दी है, इसके द्वारा हमें अपनी संस्कृति को बचाना है।

महामंडलेश्वर स्वामी श्री यतीन्द्रानंद गिरिजी महाराज, जूना अखाड़ा : एक देश है त्रिनिदाद, वहाँ घरों में भगवान की पूजा करने के बाद माता-पिता को उनके बच्चे आसन पर बैठाते हैं और आरती उतारते हैं। यह संस्कार भारत का है लेकिन उसका अनुपालन भारत के बाहर हो रहा है, भारत में नहीं - यह दुःख की बात है। इसलिए माता-पिता का पूजन करें। १४ फरवरी को वेलेंटाइन डे नहीं अपनी संस्कृति के अनुसार 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनायें।

जूना अखाड़ा की श्री महंत साध्वी चन्द्रकांता सरस्वतीजी : इस 'वेलेंटाइन डे' की परम्परा को खत्म कर हमें 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाना है। ये जो अंग्रेजी परम्पराएँ हमारे देश में पनप रही हैं, हमें उनका समापन करना है और अपनी वैदिक परम्परा को जीवित रखना है।

सुप्रसिद्ध कथाकार श्री प्रफुलभाई शुक्ला : हमने अवतारों की कथा तो बहुत की है लेकिन अवतार का प्रत्यक्ष दर्शन आज हो रहा है - पूज्य आशारामजी बापू के रूप में। मैं दुनिया के ३२ देशों में जहाँ भी गया हूँ, वहाँ पूज्य आशारामजी बापू का नाद सुनाई दिया है, लोग 'हरि ॐ' बोलते सुनाई दिये हैं।

वेलेंटाइन डे को बदल के भारतीय संस्कृति का 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने की जो प्रेरणा पूज्य बापूजी से मिली है, मैं मानता हूँ कि आगे चलकर हिन्दुस्तान के इतिहास में यह पृष्ठ स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। भारत के इतिहास में, भारत की संस्कृति में यदि किसीकी माँग, किसीकी याद हुई है तो कोई सत्ताधीश या बादशाह की नहीं, पूज्यपाद संत आशारामजी बापू जैसे संतों की हुई है। पूज्य बापूजी के चरणों में वंदना करके हम संकल्पित होते हैं : 'हम कश्मीर से कन्याकुमारी तक, गोवा से गुवाहाटी तक 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' अवश्य मनायेंगे। हम मनायेंगे, आनेवाली अगली पीढ़ी के द्वारा भी मनवायेंगे।'

सुप्रसिद्ध भागवत कथाकार स्वामी श्री देवकीनंदन ठाकुरजी महाराज : कितना अच्छा लक्ष्य है पूज्य बापूजी का! हमारे नौजवान, बहन-बेटियाँ इस गंदगी को न छुएँ जो 'वेलेंटाइन डे' के नाम पर प्रचारित है। 'वेलेंटाइन डे' तो 'सत्यानाश डे' है। बापूजी ने कितनी सुंदर परम्परा चलायी है कि १४ फरवरी को आप लोग अपने माँ-बाप की पूजा करें, सत्कार करें।

हमारी हिन्दू संस्कृति को बदनाम करने की बहुत बड़ी साजिश रची जा रही है। आप पिछले दस साल का रिकॉर्ड देखिये। मंदिरों पर, संतों पर बार-बार हमले होते हैं, चरित्रहनन की कोशिशें होती हैं। मंदिरों की जायदाद कैसे जब्त की जाय, साधु-संतों को कैसे बदनाम किया जाय - इसकी योजनाएँ तैयार की जाती हैं। वे लोग यह सब क्यों करते हैं ? क्योंकि हम लोग सह लेते हैं। अगर आप आवाज उठायें तो वे यह कर भी नहीं पायेंगे। बापूजी जैसे संत-महात्मा दिन-रात मेहनत करते हैं एक-एक नौजवान को चरित्रवान बनाने के लिए। इस बात की वे उपेक्षा कर देते हैं।

बापूजी यहाँ सूर्य की तरह चमक रहे हैं और इन सूर्य का प्रकाश यहाँ बैठे आप लोगों में चमक रहा है। गुरु के वचनों पर जो जीवनभर चलता है उसे कभी पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ता, अतः अगर आप सफल होना चाहते हो तो गुरुवचनों से प्रेम करो, अपने धर्म से प्रेम करो। अगर आपने गुरुवचनों और धर्म से प्रेम किया तो ही आप आगे बढ़ोगे। फिर तो भोग-मोक्ष आपकी मुट्ठी में ! हँसते-खेलते आप सर्वांगीण विकास करोगे, चौरासी लाख योनियों की पीड़ा से पार आप मुक्तात्मा हो जाओगे।

आद्यशक्ति काली सिद्धपीठ के महामंडलेश्वर रसानंदजी महाराज, अग्नि अखाड़ा : आप किसी अंग्रेज की संतान नहीं हो जो १४ फरवरी को 'वेलेंटाइन डे' मनाओगे। हमारी संस्कृति वैदिक संस्कृति है। पाश्चात्य संस्कृति और वैदिक संस्कृति में क्या फर्क है ? सिर्फ इतना ही फर्क है कि हमारी जो संस्कृति है वह मनुष्यता से देवत्व या ब्रह्मत्व की तरफ ले जाती है और पाश्चात्य संस्कृति मनुष्यता से पशुता की तरफ ले जाती है।

आपका वैदिक संस्कृति में जन्म हुआ है तो **'मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव।'**

की उन्नत भावना रखकर इनका पूजन करना चाहिए । यह परम्परा चलाने के लिए मैं भी पूज्य बापूजी का समर्थन करता हूँ ।

'अखिल भारतीय साधु समाज' के महामंत्री संत श्री रामचैतन्य बापूजी महाराज : बापू एक माँ हैं । कितनी-कितनी बार मैंने बापू को देखा है कि आदिवासी क्षेत्रों में, अभी भी जहाँ कोई नहीं जाता है ऐसी-ऐसी जगह बापू इतने प्यार से आदिवासी बच्चों को पढ़ाने के लिए, संस्कार देने के लिए लगे रहते हैं । इस भारत में श्रीराम, श्रीकृष्ण, महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, गुरु नानकजी और हमारे बापूजी जैसे संत आते हैं । बापू का हृदय द्रवित हो जाता है कि सब भटके हैं, हम-तुम सब भूले हुए हैं । नशे में आदमी जैसा बेहोश होता है उसी तरह हम संसार के नशे में बेहोश हैं और बापू वहाँ से हमें निकाल लेते हैं ।

१९९४ में ऋषिकेश में जब बापूजी एकांतवास में रहते थे, मैं भी 'गीता भवन' में रहता था और बापू शाम को जब घूमने आते थे तब बताते थे कि ''ब्रह्मचारी ! मुझे तो ऐसा लगता है कि इस गुफा में भजन करूँ, यहाँ से ही सबको आशीर्वाद मिलता रहेगा, सबका कल्याण होता रहेगा ।'' मैंने कहा : ''नहीं बापू ! आपकी समाज को जरूरत है, इस देश को जरूरत है ।'' राम आज बापू के रूप में आये हैं । कृष्ण आज बापू के रूप में आये हैं । हमने श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध, तुकारामजी को नहीं देखा पर मैं जब-जब बापू को देखता हूँ तब-तब बापू के अंदर मुझे सभी दिखाई देते हैं । कितना बापू का प्रेम है कि अपने शरीर की होली करके भी सबकी दिवाली कर देते हैं । सतत यात्रा-भ्रमण करके, भूख-प्यास, तपस्या सह के समाज के लिए उजाला करते हैं । हम और आप तो थोड़ा ही बैठते हैं तो थक जाते हैं परंतु बापू हमारे लिए घंटों बैठकर सत्संग करते हैं ।

बापू हमें, हमारे बच्चों को संस्कार देना चाहते हैं । 'वेलेंटाइन डे' को बापू 'मातृ-पितृ पूजन' का दिवस बनाना चाहते हैं और हमारे वेदों में भी आता है : **मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव ।** बापू ! ऐसी ही हमारे और देश के ऊपर आपके आशीर्वादों की वर्षा होती रहे और हमें आपका सान्निध्य मिलता रहे ।

'अखिल भारतीय संत समिति' के उपाध्यक्ष श्री परमेश्वरदासजी महाराज : जैसे आकाश की ऊँचाई, समुद्र की गहराई और पृथ्वी की क्षमा नहीं मापी जा सकती है, वैसे हमारे अनंत विभूषित, विद्यावाचस्पति, योगियों के योगी पूज्य आशाराम बापूजी की समाजोद्धार की क्षमता और दया कोई माप नहीं सकता है । हमारे बापूजी का कहना है कि 'तुम 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाओ और मैं तुम्हें सुख, समृद्धि और शांति दूँगा ।' अतः हम 'वेलेंटाइन डे' न मनाते हुए अपने माता-पिता की सेवा करेंगे ।

'वारकरी सम्प्रदाय' के महंत श्री समाधानजी महाराज : हमारे संतों को बदनाम करने का षड्यंत्र रचा जा रहा है । मगर सूरज के ऊपर थूकने से वह थूक अपने ही मुँह पर गिरती है, ऐसे ही हमारे संतों को जिन्होंने बदनाम किया, कालिख उनके मुँह पर ही लगी । हमारे संत सूरज की तरह देदीप्यमान हैं और विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं । समाजरूपी बगिया को गुलशन बनाना

हो तो बापूजी की प्रेरणा अनुसार 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाया जाय ।

जूना अखाड़ा के महामंडलेश्वर श्री रामगिरिजी महाराज : प्रातःस्मरणीय, परम पूजनीय, परम श्रद्धेय श्री आशारामजी बापू का जो यह कार्य है, वह स्तुत्य है, सुंदर है और संस्कृति-रक्षा के लिए है । हमें संस्कृतिरक्षार्थ 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' को घर-घर मनाना है ।

'सिंधी साधु समाज' के अध्यक्ष स्वामी श्री बलरामजी महाराज : भारत में यह जो 'वेलेंटाइन संस्कृति' आयी है उसके कारण १३ साल की उम्र से ही बच्चों के भीतर काम बढ़ता जा रहा है । इससे २५ साल की आयु तक जब वे शादी करें तब तक कइयों में नपुंसकता भी आ जाती है । ऐसे में बापूजी द्वारा 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने के निर्णय को सब संतों और सभी लोगों को मिलकर आगे बढ़ाना है, बिल्कुल इसको पूर्ण करना है ! आज यहाँ से आप संकल्प उठाकर जाइये ।

'यमुना रक्षक दल' के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जयकृष्णदासजी महाराज : भारतवर्ष के इतिहास में बापूजी पूरे देश की संस्कृति बचाने के लिए पहाड़ की तरह खड़े हैं । यह हम लोगों का सौभाग्य है कि ऐसे महापुरुष हम लोगों के बीच में हैं । परम पूज्य बापूजी को मैं नमन करता हूँ । उनका जो 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' अभियान है, उससे निश्चित रूप से हमारे देश की, सनातन धर्म की संस्कृति बचेगी ।

श्री साँईंजी महाराज : श्री श्री प्रेममूर्ति अवतारस्वरूप हमारे आशाराम बाबाजी को कोटि-कोटि प्रणाम ! 'वेलेंटाइन डे' को **मातृ-पितृदेवो भव** । की उदात्त भावना से 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' में बदलने के लिए, ईश्वर का धर्म-संदेश देने के लिए श्रीमूर्तिस्वरूप हैं आशाराम बाबाजी । श्री आशाराम बाबा का अर्थ है कि हर इन्सान राम बने । आपकी कृपा से घर-घर मंदिर जैसा हो जाता है, पूरा विश्व भी मिथ्या हो जाता है । हमारे दुर्गुण नष्ट हो जाते हैं और सद्गुण महकने लगते हैं ।

डोंगरेजी महाराज के कृपापात्र शिष्य महंत श्री दीपकभाई शास्त्री : प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद सद्गुरु श्री आशारामजी बापू के चरणों में दंडवत् प्रणाम ! 'प्रेरणा सभा' द्वारा 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का दिव्य दर्शन समाज की उन्नति व संस्कृति के उत्थान के लिए हो रहा है । जो शुभ संकल्प पूज्य बापूजी ने समाज के कल्याण के लिए लिया है, उसमें हमें भी समर्पित होकर अपनी संस्कृतिनिष्ठा के दर्शन कराने चाहिए । मातृ-पितृ पूजन द्वारा ध्रुव-प्रह्लाद जैसे बालकों के जन्म के लिए समाज में एक नयी क्रांति पैदा हो - यही आज के मंगल दिवस पर गुरुचरणों और भगवद्-चरणों में प्रार्थना ।

'श्रीराम सेना' के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रमोद मुतालिकजी : हिन्दू संस्कृति, हिन्दू समाज, हिन्दू संत-सम्प्रदाय को बचाने के लिए एक श्रेष्ठ मार्गदर्शन देनेवाले योगी पूज्य बापूजी को प्रणाम ! जो अनाचार, अत्याचार, आत्महत्या दे ऐसा वेलेंटाइन डे हमें नहीं चाहिए, हमें माता-पिता

का पूजन चाहिए। मम्मी-डैडी, केक-कैंडल हमारी संस्कृति नहीं है। वेलेंटाइन डे, फ्रेंडशिप डे - हमारी संस्कृति नहीं हैं, ये सब विकृतियाँ हैं। इनको रोकना ही चाहिए। इसलिए लाखों लोग जो यहाँ बैठे हैं उन सबको कार्यकर्ता के रूप में लाखों घरों में जाकर, 'वेलेंटाइन डे नहीं, मातृ-पितृ पूजन दिवस चाहिए' - ऐसा संदेश देना है। मैं यहाँ संकल्प लेता हूँ कि इस बार १४ फरवरी को कर्नाटक में १०० जगहों पर हजारों युवक-युवतियों को बुलाकर 'मातृ-पितृ पूजन' कार्यक्रम करवाऊँगा।

हमारे संतों, देवी-देवताओं और संस्कृति के ऊपर अपमान, अफवाह और कुप्रचार का षड्यंत्र चल रहा है। बापूजी हम लाखों-करोड़ों भक्तों के हृदय में हैं। हमें मालूम है संत कौन हैं, हमारे देव कौन हैं, हमारी परम्परा क्या है। बापूजी का अपमान व कुप्रचार चलनेवाला नहीं है। लाखों-करोड़ों हृदयों में जो संतों का एक पवित्र स्थान है, वह कोई भी मिटा नहीं सकता ! 'वेलेंटाइन डे नहीं, माता-पिता पूजन चाहिए।' यह एक श्रेष्ठ मार्गदर्शन जो बापूजी दे रहे हैं, इसको ही हम आगे लेकर जायेंगे।

'सनातन संस्था' के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री अभय वर्तक : मैं जगद्गुरु परम पूजनीय आशारामजी बापू के चरणों में वंदन करता हूँ।

जरा सोचें कि क्या छत्रपति शिवाजी महाराज ने, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, सरदार वल्लभभाई पटेलजी आदि ने वेलेंटाइन डे मनाया था ? उन्होंने तो अंग्रेजों के कपड़े जलाये थे और उसीके कारण आज हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। और आज हम उनके बालक क्या कर रहे हैं ? उनको क्या लगता होगा ? कि हमारे बलिदान का परिणाम क्या हो गया कि स्वतंत्रता के बाद इसी देश की जनता वेलेंटाइन डे मना रही है !

स्वतंत्रता तो मिल गयी लेकिन हमने गुलामी नहीं छोड़ी है, यह सबसे बड़ी दुःख की बात है। आज हमें भगतसिंह, सरदार पटेल, छत्रपति शिवाजी महाराज के जन्म का दिन याद नहीं है, हमें वेलेंटाइन डे याद है ! वेलेंटाइन वह व्यक्ति था जिसके बारे में 'रोमन कैथोलिक चर्च' ने ई.स. १९६९ में जारी कर दिया कि इस नाम का कोई संत हुआ ही नहीं।

बापूजी के आशीर्वाद से हमें अपने घर से और औरों के भी घर से वेलेंटाइन डे जैसी कुरीतियों को तड़ीपार करना है। आज बापूजी जैसे संतों का बहुत महत्त्व है। बापूजी ने हम सबके ऊपर जो अनंत उपकार किये हैं, हम उनका बदला चुका नहीं सकते।

सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्रिका 'हिन्दू वॉईस' के सम्पादक श्री पी. दैवमुत्थुजी : परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू द्वारा वेलेंटाइन डे को 'माता-पिता पूजन दिन' के रूप में मनाना सराहनीय कार्य है। वेलेंटाइन डे हमारी संस्कृति के खिलाफ है। संतों से हमारी विनती है कि हमारी संस्कृति को बचाने के लिए इस प्रकार की और भी कोशिशें की जानी चाहिए, जिस प्रकार के प्रयास पूज्य बापूजी द्वारा किये जा रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल, शिक्षा, संस्कृति, पर्यटन व लोक निर्माण विभाग मंत्री, छ.ग. : यह हमारा बड़ा सौभाग्य रहा कि वर्ष २०१२ में 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' को 'राज्यस्तरीय पर्व' के रूप में मनाने का सुअवसर हमें मिला। वास्तव में यह राष्ट्रोन्नतिकारक पर्व किसी एक राज्य में नहीं बल्कि पूरे भारत के सभी विद्यालयों-महाविद्यालयों में प्रतिवर्ष मनाया जाना चाहिए। 'मातृ-पितृ पूजन' पुस्तिका अधिक-से-अधिक विद्यार्थियों तक पहुँचे एवं वे इसका अध्ययन-मनन करें।

'मातृ-पितृ पूजन दिवस' पर्व के प्रवर्तक एवं 'प्रेरणा सभा' के अध्यक्ष

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

कोई ईसाई नहीं चाहता कि 'मेरी कन्या लोफरों की भोग्या हो जाय ।' कोई मुसलमान नहीं चाहता, 'मेरी कन्या हवसखोरों की शिकार हो जाय' और हिन्दू तो कैसे चाहेगा !

दिन-दहाड़े युवक युवती को, युवती युवक को फूल देगी, 'आई लव यू' बोलेगी, एक-दूसरे को स्पर्श करेंगे तो रज-वीर्य नाश होगा, अकारण चश्मा आ जायेगा, जवानी खो देंगे। और लाखों-लाखों नहीं, करोड़ों-करोड़ों ऐसे युवक-युवतियों को तबाह होते देख मेरा हृदय द्रवित हो गया ।

मैंने एकांत में सोचा कि इसका उपाय क्या है ? तो उपाय सुझानेवाले ने सुझा दिया कि 'गंदगी से लड़ो नहीं, अच्छाई रख दो ।' इसलिए मैंने विचार रखा कि 'वेलेंटाइन डे' के विरोध की अपेक्षा १४ फरवरी के दिन गणेशजी की स्मृति करो और 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाओ । आपका तीसरा नेत्र खुल जाय, सूझबूझ खुल जाय । और इस अच्छाई की सुवास तो ईसाइयों तक भी पहुँच रही है । कई मेरे ईसाई भक्त भी सहमत हैं, मुसलमान भी कर रहे हैं लेकिन इसको अभी और व्यापक बनाना है ।

विश्व चाहता है, सभी चाहते हैं - स्वस्थ, सुखी, सम्मानित जीवन । बुद्धि में भगवान का प्रकाश हो, मन में प्रभु का प्रेम, मानवता का प्रेम हो, इन्द्रियों में संयम हो, बस हो गया ! आपका जीवन धनभागी हो जायेगा ।

अपने पास खजाना है और यह खजाना विश्वात्मा की तरफ से सभीको मिले, इसीलिए मैंने ७ साल से यह प्रयत्न शुरू किया । अब इन संतों का साथ-सहकार मिलता जा रहा है । मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि सभी संत अपने-अपने भक्तों को प्रेरणा देंगे । वेलेंटाइन डे के निमित्त करोड़ों-करोड़ों की शराब बिकती है । हजारों-हजारों आत्महत्याएँ होती हैं और हजारों लड़के-लड़कियाँ वेलेंटाइन डे के दिन भाग जाते हैं । यह विकृति विदेशों में तो है लेकिन अपने देश में भी व्याप रही है, इसलिए इन संतों को श्रम देने का हमने साहस किया और संत भारत के युवक-युवतियों की जिंदगी बरबादी से बचे - ऐसे दैवी कार्य में सहभागी होने के लिए कहाँ-कहाँ से श्रम उठाकर आये हैं । इन सभी संतों का हम हृदयपूर्वक खूब-खूब धन्यवाद करते हैं, आभार मानते हैं क्योंकि संतों को भारत के लाल-लालियाँ तो अपने लगते हैं, विश्व के युवक-युवतियाँ भी अपने ही लगते हैं । पूरे विश्व के युवक-युवतियों की रक्षा हो, यही वैदिक संस्कृति है । किसी मजहब, किसी पंथवाली संस्कृति इन महानुभावों की नहीं है । ये मेरे हृदय की व्यथा अपनी व्यथा मानकर दौड़े-दौड़े चले आये हैं । 'वेलेंटाइन डे' के नाम पर शराब पीना, आत्महत्या करना इसके आँकड़े सुनते हैं तो हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं । इन सभी संतों को आशाराम बापू के साथ तो स्नेह है, बापू के उद्देश्य के साथ भी इनको बड़ा भारी स्नेह है इसलिए जरा-से आमंत्रण से चले आये हैं ।

साँच को आँच नहीं और झूठ को पैर नहीं ।

यह झूठी परम्परा (वेलेंटाइन डे) मनानेवालों की दुर्दशा से हमारा हृदय व्यथित होता है, लाखों का हृदय व्यथित होता है । तो देर-सवेर यह गंदी परम्परा हमारे भारत से जाय... इसलिए मानवमात्र के कल्याण का उद्देश्य रखकर 'प्रेरणा सभा' पिछले

साल भी हुई, इस बार भी हुई और होती रहेगी। अमेरिका में १०० जगहों पर पूजन दिवस के बड़े-बड़े कार्यक्रम होंगे। बच्चे अपने माता-पिता का पूजन करें, तिलक करें, प्रदक्षिणा करें और माँ-बाप बच्चों को तिलक करें और हृदय से लगायें। वैसे भी माँ-बाप का हृदय तो उदार होता है, वे ऐसे ही कृपा बरसाते रहते हैं ! लेकिन जब बच्चा कहता है न, ''माँ ! तुम मेरी हो न ?'' तो माँ की खुशी का ठिकाना नहीं रहता; ''पिताजी ! तुम मेरे हो न ?'' तो पिताजी का हृदय द्रवित हो जाता है। अगर **'मातृ-पितृदेवो भव'** करके नमस्कार करेगा तो माँ-बाप का आत्मा भी तो बच्चों पर रसधार, करुणा-कृपा बरसायेगा एवं मेरे भारत की कन्याएँ और मेरे भारत के युवक महान बनेंगे।

हम तो चाहते हैं कि ईसाइयों का भी मंगल हो, मुसलमानों का भी मंगल हो, मानवता का मंगल हो। इसलिए इन मंगल संदेश देनेवाले संतों का साथ-सहकार लेकर लोगों के जीवन में उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम जैसे दिव्य गुण आयें, ऐसा यह प्रयास किया है। जिनके जीवन में ये छः सद्गुण होते हैं, परमात्मा पद-पद पर उनको सहायता करता है।

संदेश

हमारी भारतीय संस्कृति, उसका इतिहास और विरासत - यह पूरी दुनिया में एक अलग चीज है और इससे जुड़े हुए हिन्दुत्व और हिन्दू धर्म का विचार ही देश का मार्गदर्शन कर सकता है, देश को दिशा दे सकता है। और इन्हीं विचारों से हमारी पारिवारिक व्यवस्था में, हमारे भविष्य की पीढ़ी के ऊपर अच्छे संस्कार हों- **'मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।'** इस भावना से हमारी नयी पीढ़ी का निर्माण हो और उसीके अनुसार उनका चाल-चलन, व्यवहार, जीवन रहे, इस उदात्त भावना से बापूजी ने यह कार्य अपने हाथ में लिया है। मैं बापूजी और सभी संतों को इतना ही विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि देश, भारतीय संस्कृति, विरासत व धर्म के लिए आपने जो यह महान कार्य हाथ में लिया है, हम पूरी शक्ति के साथ आपके साथ रहेंगे और इस कार्य को आखिर तक पहुँचायेंगे। मैं बहुत भाग्यवान हूँ कि परम पूज्य आशारामजी बापू का और सभी संतों का आशीर्वाद लेने का सौभाग्य मुझे मिला।

- श्री नितीन गडकरी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भा.ज.पा.

परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू द्वारा **'मातृ-पितृ-आचार्यदेवो भव।'** के वैदिक सिद्धांत के अनुसार विश्वभर में मातृ-पितृ पूजन की यह जो पहल की गयी है, उससे बच्चों का माता-पिता व गुरुजनों के प्रति आदरभाव बढ़ेगा तथा समाज में नवचेतना का संचार होगा। यह अभियान अविरत चलता रहे। मैं 'मातृ-पितृ पूजन' पुस्तक के वितरण की निर्बाध सफलता हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

- श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, मुख्यमंत्री, हरियाणा

पूज्य संत श्री आशारामजी के पावन मार्गदर्शन में वैश्विक स्तर पर प्रतिवर्ष १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन' कार्यक्रमों का अभियान चला के पुनः ऋषि-मुनि परम्परा का पुनरुत्थान करना अत्यंत सराहनीय कदम है। पूज्य बापूजी ने पूरे विश्व में मातृ-पितृ पूजन का जो आह्वान किया है, वह देश के करोड़ों बच्चों का ओज-तेज व आत्मबल बढ़ाने में व उनकी चहुँमुखी उन्नति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

- श्री पवन कुमार बंसल, केन्द्रीय रेलमंत्री

भक्ति, कर्म और ज्ञान गंगा की अद्भुत त्रिवेणी : प्रयाग कुम्भ

(प्रयाग कुम्भ : १४ जनवरी से १० मार्च)

कुम्भ एवं उसका गरिमामय इतिहास भारतीय संस्कृति की विरासत का गौरवभरा, वैभवशाली प्रतीक है। कुम्भ पर्व के चार तीर्थस्थलों में पूरे विश्व से श्रद्धालु भक्त आकर एक साथ पूरे देश की समन्वित संस्कृति, विश्वबंधुत्व की सद्भावना और जनसामान्य की अपार आस्था का दर्शन कराते हैं। कुम्भ पर्व भारतीय संस्कृति की जीवंतता का प्रमाण है।

कुम्भ पर्व का इतिहास

इस संबंध में कथा आती है कि समुद्र-मंथन से १४ रत्नों की प्राप्ति हुई। जिसमें अंत में अमृत-कलश लेकर भगवान धन्वंतरि प्रकट हुए। देव-असुर दोनों की अमृत पाने की होड़ ने एक युद्ध का रूप ले लिया। असुरों से अमृत की रक्षा के लिए इन्द्रपुत्र जयंत कलश को लेकर वहाँ से चल दिये। वह युद्ध १२ दिनों तक चला। देवताओं के १२ दिन मनुष्यों के १२ वर्ष हो जाते हैं। सूर्य, चन्द्र, गुरु एवं शनि ने अमृत-कलश की रक्षा में सहयोग दिया। इन बारह वर्षों में बारह जगहों पर कलश रखने से अमृत की कुछ बूँदें उन स्थानों पर छलकीं। उनमें से आठ पवित्र स्थान देवलोक में हैं और चार स्थान पृथ्वी पर हैं - प्रयाग, नासिक, उज्जैन और हरिद्वार। इन चार में से प्रत्येक स्थान में १२-१२ वर्ष के अंतराल पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। प्रयाग और हरिद्वार में होनेवाले प्रत्येक कुम्भ के बाद ६ वर्ष के अंतराल पर वहाँ अर्धकुम्भ का भी आयोजन होता है।

कुम्भ का वैज्ञानिक महत्त्व

सौर-मंडल के विशिष्ट ग्रहों के विशेष राशियों में प्रवेश करने से बना खगोलीय संयोग इस पर्व का आधार है। जब सूर्य और चन्द्रमा मकर राशि में हों और बृहस्पति मेष अथवा वृषभ राशि में स्थित हों तब प्रयाग में कुम्भ महापर्व का योग बनता है। इन दिनों यहाँ का वातावरण दिव्य, अद्भुत तरंगों व स्पंदनों से भर जाता है, जो यहाँ के जल पर भी अपना प्रभाव छोड़ते हैं। जिससे पतितपावनी गंगा की धारा और भी पावन हो जाती है, जिसमें स्नान करने से श्रद्धालुओं को विशेष शांति व प्रसन्नता की अनुभूति होती है।

भागीरथी गंगा के जल में कभी कीड़े नहीं पड़ते हैं। यह माँ गंगा की अद्भुत महिमा है, जो भारतीय संस्कृति की महानता का दर्शन कराती है। इसे औषधि माना गया है। वैज्ञानिकों ने भी प्रयोगों द्वारा इस बात को स्वीकारा है। उनके अनुसार गंगाजल में ऑक्सीजन की मात्रा अत्यधिक होने और इसमें कुछ विशिष्ट जीवाणुओं के मौजूद होने से यह अत्यधिक विशिष्ट है। गंगाजल में हानिकारक जीवाणु नहीं पड़ते और मिलाये भी जाते हैं तो गंगाजल में उन्हें दूर करने की अद्भुत क्षमता है जो कि अन्य नदियों के जल में नहीं पायी जाती है।

कुम्भ पर्व पर शाही स्नान

मकर संक्रांति से प्रारम्भ होनेवाले प्रयाग कुम्भ में हर दिन गंगास्नान पवित्र माना जाता है फिर भी कुछ दिवसों पर विशेष स्नान होते हैं। इसके अलावा कुछ शाही स्नान होते हैं, जिसमें भारत के विभिन्न अखाड़ों के साधु-संतों की विशाल शोभायात्राएँ निकलती हैं।

प्रयागराज की महिमा

'पद्म पुराण' में महादेवजी कहते हैं : ''नारद ! जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती इन तीनों नदियों का संगम है, वही तीर्थप्रवर प्रयाग है। यह देवताओं के लिए भी दुर्लभ है । इसके समान तीर्थ तीनों लोकों में न कोई हुआ है, न होगा। विद्वन् ! जो प्रातःकाल प्रयाग में स्नान करता है, वह महान पाप से मुक्त हो जाता है । जो मनुष्य प्रयाग में स्नान करता है, वह धनवान और दीर्घजीवी होता है। **माघ मास में प्रयाग-स्नान करने से प्राप्त पुण्यफल की गणना नहीं हो सकती ।**''

'अग्नि पुराण' में वसिष्ठजी कहते हैं : ''प्रयाग में गंगा और यमुना के संगम पर किये हुए दान, श्राद्ध और जप आदि का फल अक्षय होता है। प्रयाग में साठ करोड़ दस हजार तीर्थों का निवास है ।''

इस त्रिवेणी का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए जंगम तीर्थ ब्रह्मज्ञानी संत पूज्य बापूजी कहते हैं : ''गंगाजी ज्ञान का प्रतीक हैं, यमुनाजी भक्ति का और सरस्वतीजी विद्या का - इस त्रिवेणी में भी गोता लगाना चाहिए । बाहर की त्रिवेणी में तो शरीर नहायेगा और अंदर की त्रिवेणी में जब सत्संगी नहायें, तब मिलेगा मोक्ष का द्वार !''

कुम्भ-परम्परा कायम क्यों ?

(१) पाप-ताप के शमन हेतु : कुम्भ के अवसर पर ग्रहों के संयोग से उस स्थान की नदियों का जल और अधिक पावन हो जाता है, जिसमें स्नान मनुष्य के पाप-ताप का शमन करने में सहायक होता है ।

(२) वास्तविक उद्देश्य की यात्रा कराने हेतु : मानव को अपने परम लक्ष्य भगवत्प्राप्ति में सहायभूत होने के उद्देश्य से हजारों वर्षों से संतों ने, ऋषियों ने इस परम्परा को कायम रखा है। कुम्भ में एक ओर जहाँ जिज्ञासु, अर्थार्थी आदि सभी प्रकार के भक्त आते हैं, वहीं दूसरी ओर सिद्ध, साधु, तपस्वी, जती-जोगी आदि न जाने किन-किन गिरि-गुफाओं से कुम्भ में पहुँचते हैं । उनमें से कोई-कोई विरले जीवन्मुक्त महापुरुष भी होते हैं, जो इन कुम्भों में पहुँचकर तीर्थों को तीर्थत्व प्रदान करते हैं । परम सौभाग्य, पुण्याई तथा ईश्वर की विशेष अनुकम्पा उदय होती है तो कुम्भ के अवसर पर पूज्य बापूजी जैसे जीवन्मुक्त ब्रह्मज्ञानी महापुरुष के दर्शन व सत्संग का लाभ मिलता है और श्रद्धालु उनसे सब दुःखों से पार होने की युक्तियाँ पा लेते हैं ।

(३) स्वयं तीर्थों के पावन होने हेतु : 'अग्नि पुराण' में वसिष्ठजी कहते हैं : ''गंगा तीर्थ से निकली मिट्टी धारण करनेवाला मानव सूर्य के समान पापों का नाशक होता है । जो मानव गंगा का दर्शन, स्पर्श और जलपान करता है, वह अपनी सैकड़ों-हजारों पीढ़ियों को पवित्र कर देता है ।''

ऐसी गंगा माता से जब राजा भगीरथ ने स्वर्ग से धरती पर आने की प्रार्थना की तब गंगाजी ने कहा : ''भगीरथ ! लोग 'गंगे हर' कहकर मुझमें स्नान करेंगे और अपने पाप मुझमें डाल जायेंगे । फिर उस पाप को मैं कहाँ धोऊँगी ?''

भगीरथ परब्रह्म परमात्मा में कुछ देर शांत हो गये, बोले : ''हे माँ ! लोग 'गंगे हर' कहकर तुझमें स्नान करेंगे और पाप डालेंगे, जिससे तुम दूषित तो होओगी किंतु जब आत्मतीर्थ में नहाये हुए ब्रह्मज्ञानी महापुरुष तुममें स्नान करेंगे तो उनके अंगस्पर्श से तुम्हारे पाप नष्ट हो जायेंगे और तुम पवित्र हो जाओगी ।'' अतः जब ऐसे कुम्भों में ब्रह्मज्ञानी महापुरुष गंगास्नान करने आते हैं तो पतितपावनी गंगा स्वयं को पावन करने का सौभाग्य प्राप्त कर तृप्त होती हैं ।

कुम्भ का आध्यात्मिकीकरण

कुम्भ का **आधिभौतिक लाभ** तो कुम्भ में आयी भक्तों की भीड़ को वहाँ के पवित्र, सात्त्विक वातावरण से मिल जाता है । **आधिदैविक लाभ**

भी गंगा माँ के जल में श्रद्धा-भक्ति से स्नान करने से मिल जाता है परंतु कुम्भ का **आध्यात्मिक लाभ** क्या है ? वह कैसे प्राप्त हो ? इन प्रश्नों के उत्तर तो किन्हीं आत्मवेत्ता महापुरुष के श्रीचरणों में बैठकर ही प्राप्त किये जा सकते हैं ।

आत्मवेत्ता ब्रह्मनिष्ठ संत पूज्य बापूजी कुम्भ के आध्यात्मिकीकरण की यात्रा कराते हुए कहते हैं : ''तन, मन व मति के दोषों की निवृत्ति के लिए तीर्थ और कुम्भ पर्व है । अमृत की प्राप्ति के लिए होनेवाला देवासुर संग्राम हमारे भीतर भी हो रहा है । संत तुलसीदासजी कहते हैं : 'वेद समुद्र है, ज्ञान मंदराचल है और संत देवता हैं जो उस समुद्र को मथकर कथारूपी अमृत निकालते हैं। उस अमृत में भक्ति और सत्संग रूपी मधुरता बसी रहती है ।'

कुमति के विचार ही असुर हैं । विवेक ही मथनी है और प्राण-अपान ही वासुकि नागरूपी रस्सी हैं । संसार ही सागर है । दैवी और आसुरी वृत्तियों को विवेकरूपी मंदराचल का सहयोग लेकर मंथन करते-करते अपने चित्तरूपी सागर से चैतन्य का अमृत खोजने की व्यवस्था का नाम है **'कुम्भ पर्व'** । वे लोग सच में बड़भागी हैं जिन्हें अपने मूल अमृत-स्वभाव आत्मा की ओर ले जानेवाला वातावरण और सत्संग मिल पाता है । **शरीर मरेगा कि तुम मरोगे ? बीमारी शरीर को होती है कि तुमको होती है ? दुःख मन में होता है कि तुममें होता है ? दुःख आता है चला जाता है, तुम चले जाते हो क्या ? बीमारी आती है चली जाती है, तुम चले जाते हो क्या ? इस प्रकार का आत्मज्ञान और उसको पाने की युक्तियाँ सबको सहज में मिल जाय, इसीलिए कुम्भ का पर्व है ।**

कुम्भ में संत-महात्माओं का सत्संग-सान्निध्य मिलता है । उसका हेतु है कि हमारा मन अपनी जन्म-जन्मांतरों की वासनाओं का अंत करके भगवत्सुख में, भगवद्शांति में सराबोर होकर भगवत्प्रसाद पाने को तैयार हो और मतिदाता में विश्रांति पाये ।''

इस तरह मनुष्य के सर्वांगीण विकास की दूरदृष्टि रखनेवाले भारत के ऋषि-मुनियों द्वारा सदियों से कुम्भ-परम्परा की सुरक्षा की गयी है । जिसका मुख्य उद्देश्य यही है कि इस अवसर पर मनुष्य किन्हीं ब्रह्मज्ञानी संत की शरण में पहुँचकर जीवन के वास्तविक अमृत 'आत्मानंद' की पावन गंगा में भी गोता लगा ले । □

अब हमें और कुछ भी नहीं चाहिए

गुरुकृपा से ही यह सद्विचार आया,
अब हमें और कुछ भी नहीं चाहिए ।
मैं न कर पाया जो वह सुधार आया,
अब हमें और कुछ भी नहीं चाहिए ॥
कामनाओं के पीछे बहुत दुःख मिला,
कामनापूर्ति का कुछ क्षणिक सुख मिला ।
कामना छोड़ दुःख-सुख के पार आया,
अब हमें और कुछ भी नहीं चाहिए ॥
यहाँ कितना ही ऐश्वर्य धन क्यों न हो,
सुयश सन्मान सुंदर तन क्यों न हो ।
समझ में यह सभी कुछ निस्सार आया,
अब हमें और कुछ भी नहीं चाहिए ॥
खोज में जिसकी अब तक भटकता रहा,
वह वहीं था जहाँ मैं अटकता रहा ।
बाद मुद्दत के आखिरी द्वार आया,
अब हमें और कुछ भी नहीं चाहिए ॥
जहाँ आकर कोई रंक रहता नहीं,
तृप्त हो जाता फिर कुछ भी चहता नहीं ।
मेरे सन्मुख वही दरबार आया,
अब हमें और कुछ भी नहीं चाहिए ॥
अपने में अपने प्रभु का पता मिल गया,
प्राप्त की प्राप्ति से अब हृदय खिल गया ।
तब पथिक में यही उद्गार आया,
अब हमें और कुछ भी नहीं चाहिए ॥

- संत पथिकजी महाराज

घमोचन, अघमोचन का भेद नहीं देखते भगवान

जिस परात्पर परब्रह्म परमेश्वर से जड़-चेतन सभी सत्ता पाते हैं, ऐसे सामर्थ्यवान, आनंदस्वरूप, ज्ञानस्वरूप, सबको अपने माधुर्य से मधुमय करनेवाले परमेश्वर की नाम-महिमा का कहाँ तक वर्णन किया जाय !

भगवन्नाम अनंत माधुर्य, ऐश्वर्य और सुख की खान है। यह जीव का कल्याण करनेवाला मोक्ष-सुख का पवित्रतम मार्ग है। कल्याणकारी भगवन्नाम-जप से अनगिनत जीवों का उद्धार हुआ है।

एक गँवार किसी महात्मा के पास जाकर बोला : ''महाराज ! हमको तो कोई सीधी-सादी बात बता दो, हम भगवान का नाम लेंगे।''

महात्माजी ने कहा : ''तुम 'अघमोचन-अघमोचन' ('अघ' माने पाप, 'मोचन' माने छुड़ानेवाला) नाम लिया करो।''

अब वह बेचारा गाँव का गँवार आदमी 'अघमोचन-अघमोचन...' करता हुआ चला तो गाँव जाते-जाते 'अ' भूल गया। वह 'घमोचन-घमोचन' बोलने लगा। पढ़ा-लिखा तो था नहीं ! एक दिन वह हल जोत रहा था और 'घमोचन-घमोचन...' कर रहा था, इतने में वैकुंठ लोक में भगवान भोजन करने बैठे। उनको हँसी आ गयी। लक्ष्मीजी ने पूछा : ''आप क्यों हँसते हो ?''

भगवान बोले : ''आज हमारा भक्त एक ऐसा नाम ले रहा है कि वैसा नाम तो किसी शास्त्र में है ही नहीं !''

''तब तो हम उसको देखेंगे और सुनेंगे कि कौन-सा नाम ले रहा है।'' लक्ष्मी-नारायण दोनों खेत में पहुँचे। पास में गड्ढा था। भगवान स्वयं तो वहाँ छिप गये और लक्ष्मीजी भक्त के पास जाकर पूछने लगीं : ''अरे, तू यह क्या घमोचन-घमोचन बोल रहा है ?'' उन्होंने एक बार, दो बार, तीन बार पूछा परंतु वह कुछ उत्तर ही न दे। उसने सोचा कि 'इसको बताने में हमारा नाम-जप छूट जायेगा।' अतः वह चुप रहा, बोला ही नहीं। जब बार-बार लक्ष्मीजी पूछती रहीं तो अंत में उसको आया गुस्सा, गाँव का आदमी तो था ही, बोला : ''जा-जा ! तेरे खसम (पति) का नाम ले रहा हूँ।''

अब तो लक्ष्मीजी डरीं कि यह तो हमको पहचान गया। फिर बोलीं : ''अरे, तू मेरे खसम को जानता है क्या ? कहाँ है मेरा खसम ?'' एक बार, दो बार, तीन बार पूछने पर वह फिर झुँझलाकर बोला : ''वहाँ गड्ढे में है, जा !''

लक्ष्मीजी समझ गयीं कि इसने हमको पहचान लिया। नारायण भी वहाँ आ गये और बोले : ''लक्ष्मी ! देख ली मेरे नाम की महिमा ! यह अघमोचन और घमोचन का भेद भले न समझता हो लेकिन हम तो समझते हैं कि यह हमारा ही नाम ले रहा है। यह हमारा ही नाम समझकर घमोचन नाम से हमको ही पुकार रहा है। अब आओ, इसे दर्शन दें।'' भगवान ने भक्त को दर्शन देकर कृतार्थ किया।

भक्त शुद्ध-अशुद्ध, टूटे-फूटे शब्दों से अथवा गुस्से में भी, कैसे भी भगवान का नाम लेता है तो भगवान का हृदय उससे मिलने को लालायित हो उठता है।

तुलसी अपने राम को रीझ भजो या खीज ।
भूमि फेंके उगेंगे उलटे सीधे बीज ॥

अजामिल ('श्रीमद् भागवत' में जिनका जीवन-वृत्तांत आता है), महर्षि वाल्मीकिजी तथा अन्य कई नामी-अनामी भक्त एवं महापुरुष हैं, जो भगवन्नाम-जप के प्रताप से महानता को प्राप्त हो गये, भवसागर से तर गये ।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''परमेश्वर का नाम प्रतिदिन कम-से-कम १००० बार तो लेना ही चाहिए अर्थात् भगवन्नाम की १० मालाएँ तो फेरनी ही चाहिए ताकि उन्नति तो हो ही किंतु पतन न हो । अपने मंत्र का अर्थ समझकर प्रीतिपूर्वक जप करें । इससे बहुत लाभ होगा ।''

नाम-जप पापों व दुःखों की निवृत्ति का तथा परमानंद की प्राप्ति, आत्मविश्रांति की प्राप्ति का भी साधन है क्योंकि इसमें पापनाशिनी (नरकोद्धारिणी) शक्ति के साथ-साथ जगत-आनंददायिनी शक्ति भी है । भगवन्नाम-जप परम साध्य, परमानंदस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के पथ पर प्रारम्भिक साधन भी है और अंतिम साधन भी । अच्छे भाव से, कुभाव से, क्रोध से या आलस्य से, किसी भी तरह से यदि भगवान का नाम लिया जाता है तो जापक का दसों दिशाओं में मंगल-ही-मंगल होता है ।

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ॥

(श्री रामचरित. बा.कां. : २७.१)

तो फिर सच्चे हृदय से हरि का स्मरण करने से कितना कल्याण होगा ! **जपात् सिद्धिः जपात् सिद्धिः जपात् सिद्धिर्न संशयः ।**

जप करते रहो... हरि का स्मरण करते रहो... इससे आपको सिद्धि मिलेगी । आपका मन सात्त्विक होगा, पवित्र होगा तथा भगवद्-आनंद और भगवद्रस प्रकट होने लगेगा । ❐

अपना वास्तविक स्वरूप जानो !

महर्षि पराशरजी अपने शिष्य मैत्रेय को जीव के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान देते हुए कहते हैं : ''हे शिष्य ! सुख-दुःख, हर्ष-शोक, धर्म-अधर्म का जो ज्ञाता है, जिससे ग्रहण-त्याग दोनों सिद्ध होते हैं तथा स्थूल, सूक्ष्म व कारण तीनों शरीर और उनके धर्म जिसके द्वारा प्रकाशित होते हैं और जिसे कोई भी दृश्य-पदार्थ प्रकाशित नहीं कर सकता, वह चैतन्य स्वयंज्योति तुम्हारा स्वरूप है । तात्पर्य - बुद्धि, आकाश, काल, दिशा आदि अति सूक्ष्म सभी अनात्म पदार्थों को तथा पृथ्वी, जल, तेज, वायु और उनके कार्य देह, पर्वत आदि अति स्थूल पदार्थों को आत्मा समान ही प्रकाशता है । जैसे हम लोगों की दृष्टि से परमाणु अति सूक्ष्म है और देह, पर्वत आदि अति स्थूल हैं परंतु सूर्य की दृष्टि से परमाणु सूक्ष्म नहीं और देह, पर्वत आदि स्थूल नहीं हैं क्योंकि सूर्य परमाणु आदि पदार्थों तथा पर्वत आदि पदार्थों को एक समान ही प्रकाशता है । तू 'अस्ति, भाति, प्रिय' रूप सामान्य चैतन्य स्वमहिमा में स्थित है (अस्ति = है, भाति = जानने में आता है) ।

जो बुद्धि आदि सर्व अनात्म दृश्य-पदार्थों को मापनेवाला है और जो उन अनात्म पदार्थों से मापा नहीं जाता, वही तुम्हारा स्वरूप है । द्रष्टा ही दृश्य को मापता है, दृश्य से द्रष्टा मापा नहीं जाता । जो सब देश, काल, वस्तु में 'अस्ति, भाति, प्रिय' स्वरूप से उन देश, काल आदि का आधार, सर्वदा हाजिर-हजूर है तथा जो मन के चिंतन में नहीं आता अपितु मन का द्रष्टा है, उसीको तुम अपना स्वरूप ब्रह्म जानो । जो मन, वाणी के चिंतन, कथन में आता है उसे अज्ञान, माया व उनका कार्य प्रपंच जानो । वह तुम्हारा स्वरूप ब्रह्म नहीं, वह संसारी माया का स्वरूप है ।''

('आध्यात्मिक विष्णु पुराण' से) ❐

उत्तरायण यानी आत्मसूर्य की ओर

– पूज्य बापूजी

(मकर संक्रांति : १४ जनवरी)

जिस दिन भगवान सूर्यनारायण उत्तर दिशा की तरफ प्रयाण करते हैं, उस दिन उत्तरायण (मकर संक्रांति) पर्व मनाया जाता है । इस दिन से अंधकारमयी रात्रि कम होती जाती है और प्रकाशमय दिवस बढ़ता जाता है । प्रकृति का यह परिवर्तन हमें प्रेरणा देता है कि हम भी अपना जीवन आत्म-उन्नति व परमात्मप्राप्ति की ओर अग्रसर करें । अज्ञानरूपी अंधकार को दूर कर आत्मज्ञानरूपी प्रकाश प्राप्त करने का यत्न करें ।

उत्तरायण का ऐतिहासिक महत्त्व

उत्तरायण का पर्व प्राकृतिक नियमों से जुड़ा पर्व है । सूर्य की बारह राशियाँ मानी गयी हैं । हर महीने सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है । इसमें मुख्य दो राशियाँ बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं - एक मकर और दूसरी कर्क । सूर्य के मकर राशि में प्रवेश को 'मकर संक्रांति' बोलते हैं । देवताओं का प्रभात उत्तरायण के दिन से माना जाता है ।

दक्षिण भारत में तमिल वर्ष की शुरुआत इसी उत्तरायण से मानी जाती है और 'थई पोंगल' इस उत्सव का नाम है । पंजाब में 'लोहड़ी उत्सव' तथा सिंधी जगत में 'तिर-मूरी' के नाम से इस प्राकृतिक उत्सव को मनाया जाता है । महाराष्ट्र में इस पर्व पर एक-दूसरे को तिल-गुड़ देते हुए बोलते हैं 'तिळ-गुळ घ्या, गोड-गोड बोला' अर्थात् **'तिल-गुड़ लो और मीठा-मीठा बोलो ।'** आपके स्वभाव में मिठास भर दो, चिंतन में मिठास भर दो ।

सम्यक् क्रांति का संदेश

क्रांति तो बहुत लोग करते हैं लेकिन क्रांति से तो तोड़फोड़ होती है । सम्यक् संक्रांति... एक-दूसरे को समझें । एक-दूसरे का सिर फोड़ने से समाज नहीं सुधरेगा लेकिन एक-दूसरे के अंदर सम्यक् क्रांति, सम्यक् विचार का उदय हो कि **परस्परदेवो भव ।** सबकी भलाई में अपनी भलाई, सबके मंगल में अपना मंगल, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति । सम्यक् क्रांति कहती है कि आपको ठीक से सबकी भलाईवाली उन्नति करनी चाहिए ।

उत्तरायण पर्व कैसे मनायें ?

इस पर्व पर तिल का विशेष महत्त्व माना गया है । तिल का उबटन लगाना, तिलमिश्रित जल से स्नान, तिलमिश्रित जल का पान, तिल का हवन, तिल-सेवन तथा तिल-दान - ये सभी पापशामक और पुण्यदायी प्रवृत्तियाँ हैं । कुछ ऐसे दिन होते हैं, कुछ ऐसी घड़ियाँ होती हैं, कुछ ऐसे पर्व होते हैं जिन पर शुभ कर्मों की विशेषता मानी जाती है । कुछ समय होता है जिस समय विशिष्ट चीज का ज्यादा महत्त्व होता है । जैसे सूर्योदय से पहले पानी पीते हैं तो स्वास्थ्य के लिए बड़ा लाभदायी है और खूब भूख लगती है तब पानी पीते हैं तो वह विष हो जाता है । ऐसे ही पर्वों का अपने-आपमें महत्त्व है ।

उत्तरायण के दिन से शुभ कर्म विशेष रूप से शुरू किये जाते हैं । आज के दिन दिया हुआ अर्घ्य, किया हुआ होम-हवन, जप-ध्यान और दान-पुण्य विशेष फलदायी माना जाता है । उत्तरायण पर्व पर दान का विशेष महत्त्व है । इस दिन कोई रुपया-पैसा दान करता है, कोई तिल-गुड़ दान करता है । आज के दिन लोगों को सत्साहित्य के दान का भी सुअवसर प्राप्त किया जा सकता है । परंतु **मैं तो चाहता हूँ कि आप अपने को ही भगवान के चरणों में दान कर डालो ।**

सूर्य-स्नान का महत्त्व

सूर्य की मीठी किरणों में स्नान करो और

सिर को ढँक के ज्यादा गर्म न लगें ऐसी किरणों में लेट जाओ । लेटे-लेटे सूर्य-स्नान विशेष फायदा करता है, अगर और अधिक फायदा चाहिए तो पतला-सा काला कम्बल ओढ़कर भी सूर्य की किरणें ले सकते हैं । सारे शरीर को सूर्य की किरणें मिलें जिससे आपके अंगों में अगर रंगों की कमी हो, वात-पित्त की अव्यवस्था हो तो ठीक हो जाय । सूर्य-स्नान करने से प्रकट और छुपे रोग भी मिटते हैं । अतः सूर्य-स्नान करना चाहिए । सूर्य-स्नान करने के पहले एक गिलास गुनगुना पानी पी लो और सूर्य-स्नान करने के बाद ठंडे पानी से नहा लो तो ज्यादा फायदा होगा । शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बाहर से सूर्य-स्नान ठीक है लेकिन मन और मति को ठीक करने के लिए भगवान के नाम का जप जरूरी है ।

सूर्योपासना का शुभ दिन

उत्तरायण के दिन भगवान शिव को तिल-चावल अर्पण करने अथवा तिल-चावलमिश्रित जल से अर्घ्य देने का भी विधान है । आदित्य देव की उपासना करते समय सूर्यगायत्री का जप करके अगर ताँबे के लोटे से जल चढ़ाते हैं और चढ़ा हुआ जल जिस धरती पर गिरा, वहाँ की मिट्टी लेकर तिलक लगाते हैं तथा लोटे में बचाकर रखा हुआ जल महामृत्युंजय मंत्र का जप करते हुए पीते हैं तो आरोग्य की खूब रक्षा होती है ।

उत्तरायण के दिन सूर्यनारायण का मानसिक रूप से ध्यान करके मन-ही-मन उनसे आयु-आरोग्य के लिए प्रार्थना करनी चाहिए । इस दिन की प्रार्थना विशेष प्रभावशाली होती है । सूर्य का ध्यान करने से बुद्धिशक्ति और 'स्व'भावशक्ति का विकास होता है । मैं आपको यह सलाह देता हूँ कि सुबह-सुबह सूर्य का दर्शन कर लीजिये और आँखें बंद करके सूर्यनारायण का ध्यान करें तो लाभ होगा ।

उत्तरायण का परम संदेश

सात्त्विक भोजन, सात्त्विक संग और सात्त्विक विचार करके अपने जीवन को भीष्म पितामह की नाईं उस परब्रह्म परमात्मा के साथ तदाकार करने के लिए तुम्हारा जन्म हुआ है, इस बात को कभी न भूलें । उत्तरायण को भी पचा लें, जीवन को भी पचा लें और मौत को पचाकर अमर हो लें इसीलिए तुम्हारी जिंदगी है ।

सूर्य आज करवट लेकर अंधकार का पक्ष छोड़कर प्रकाश की तरफ चलता है, दक्षिणायन छोड़कर उत्तरायण की ओर चलता है । ऐसे 'तू-तेरा, मैं-मेरा' की दक्षिणायन वृत्ति छोड़कर 'तू' और 'मैं' में जो छुपा है उस परमेश्वर के रास्ते चलने का आज फिर विशेष दृढ़ संकल्प करो, यह मेरा लालच है और प्रार्थना भी है । दक्षिणायन की तरफ सूर्य था तब था, फिर ६ महीने के बाद जायेगा । यह बाहर का सूर्य तो दक्षिण और उत्तर हो रहा है लेकिन तुम्हारा आत्मसूर्य तो महाराज ! इस सूर्य को भी सत्ता देता है । ऐसे सूर्यों के भी सूर्य - **ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते** का आप अनुसंधान करें यही उत्तरायण के दिन का संदेशा है । इस संदेश को मान लें, जान लें तो कितना अच्छा होगा ! उत्तरायण पर्व की आप सबको खूब-खूब बधाइयाँ ! ❑

पुण्यदायी तिथियाँ

२५ जनवरी : चतुर्दशी-आर्द्रा नक्षत्र योग (सुबह ७ से दोपहर १२-३३ तक) (ॐकार का जप अक्षय फलदायी)

२७ जनवरी : रविपुष्यामृत योग (सूर्योदय से शाम ४-३० तक)

१० फरवरी : मौनी-त्रिवेणी अमावस्या, कुम्भ प्रयाग का प्रमुख शाही स्नान

१२ फरवरी : विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : दोपहर १२-५३ से सूर्यास्त तक)

१४ फरवरी : मातृ-पितृ पूजन दिवस, वसंत पंचमी-श्री पंचमी, सरस्वती पूजा

१७ फरवरी : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से दोपहर १२-४८ तक)

भगवद्भक्त राजा पृथु

(गतांक से शेष)

महाराज पृथु की पत्नी महारानी अर्चि भी उनके साथ वन को गयी थीं। वे बड़ी सुकुमारी थीं, पैरों से भूमि का स्पर्श करने योग्य भी नहीं थीं। फिर भी उन्होंने अपने स्वामी के व्रत और नियमादि का पालन करते हुए उनकी खूब सेवा की और मुनिवृत्ति के अनुसार कंद-मूल आदि से निर्वाह किया।

महाराज पृथु की देह को जीवन के चेतना आदि सभी धर्मों से रहित देख उस सती ने कुछ देर विलाप किया। फिर पर्वत के ऊपर चिता बनाकर महाराज की देह को चिता पर रख दिया और उस समय के सारे कृत्य कर नदी के जल में स्नान किया। अपने परम पराक्रमी पति को जलांजलि दे आकाश में स्थित देवताओं की वंदना की तथा तीन बार चिता की परिक्रमा कर पतिदेव के चरणों का ध्यान करती हुई अग्नि में प्रवेश कर गयीं।

परम साध्वी अर्चि को इस प्रकार अपने पति वीरवर पृथु का अनुगमन करते देख सहस्रों वरदायिनी देवियों ने अपने-अपने पतियों के साथ उनकी स्तुति की। देवियों ने कहा : ''अहो ! यह स्त्री धन्य है! इसने अपने पति की मन-वाणी-शरीर से ठीक उसी प्रकार सेवा की है जैसे श्रीलक्ष्मीजी भगवान विष्णु की करती हैं। अवश्य ही अपने अचिंत्य कर्म के प्रभाव से यह सती हमें भी लाँघकर अपने पति के साथ उच्चतर लोकों को जा रही है। इस लोक में कुछ ही दिनों का जीवन होने पर भी जो लोग भगवान के परम पद की प्राप्ति करानेवाला आत्मज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, उनके लिए संसार में कौन-सा पदार्थ दुर्लभ है ? अतः **जो पुरुष बड़ी कठिनता से भूलोक में मोक्ष का साधनरूप मनुष्य-शरीर पाकर भी विषयों में आसक्त रहता है, वह निश्चय ही आत्मघाती है।**''

श्री मैत्रेयजी कहते हैं : ''विदुरजी ! जो पुरुष इस परम पवित्र चरित्र को श्रद्धापूर्वक (निष्काम भाव से) एकाग्रचित्त से पढ़ता, सुनता अथवा सुनाता है, वह भी महाराज पृथु के पद - भगवान के परम धाम को प्राप्त होता है। इसका सकाम भाव से पाठ करने पर हर वर्ण के लोग अपने-अपने क्षेत्र में उन्नति को प्राप्त होते हैं। स्त्री हो या पुरुष, जो कोई इसे आदरपूर्वक तीन बार सुनता है, वह संतानहीन हो तो पुत्रवान, धनहीन हो तो महाधनी, कीर्तिहीन हो तो यशस्वी और मूर्ख हो तो पंडित हो जाता है। यह धन, यश और आयु की वृद्धि करनेवाला, स्वर्ग की प्राप्ति करानेवाला और कलियुग के दोषों का नाश करनेवाला है। यह धर्मादि चतुर्वर्ग की प्राप्ति में भी बड़ा सहायक है; इसलिए जो लोग धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को भलीभाँति सिद्ध करना चाहते हों, उन्हें इसका श्रद्धापूर्वक श्रवण करना चाहिए।

मनुष्य को चाहिए कि अन्य सब प्रकार की आसक्तियों को छोड़कर भगवान में विशुद्ध निष्काम भक्तिभाव रखते हुए महाराज पृथु के इस निर्मल चरित को पढ़े, सुने और सुनाये। जो पुरुष इस पृथु-चरित का प्रतिदिन आदरपूर्वक, निष्काम भाव से श्रवण और कीर्तन करता है, उसका जिनके चरण संसार-सागर को पार करने के लिए नौका के समान हैं, उन सर्वव्यापक घट-घटवासी श्रीहरि में सुदृढ़ अनुराग हो जाता है।'' (समाप्त) □

कर्म का अकाट्य सिद्धांत

– पूज्य बापूजी

यह संसार कर्मभूमि है। यहाँ कर्म और कर्मफल की बड़ी सुव्यवस्था है। नरक और नीच योनियाँ पाप का फल हैं। स्वर्ग और ऊँचे भोग ये पुण्य का फल हैं। मनुष्य के जीवन में पुण्य और पाप दोनों का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा चलता है और जो जैसा करता है वैसा फिर उसको परिणाम भी मिलता है।

जयपुर और कोटा के बीच सवाई माधोपुर से थोड़ा-सा दूर 'क्वालजी' नामक प्रसिद्ध तीर्थ है। नारायण शर्मा नाम के एक व्यक्ति के कुछ साथी उस तीर्थ में गये। वहाँ एक भिखमंगे को देखकर नारायण शर्मा के एक साथी का हृदय पसीजा। उसने उस भिखारी से पूछा : ''अरे भाई ! ये तेरी दोनों टाँगें कैसे कटीं ? एक्सीडेंट में कटीं कि क्या हुआ ? एक्सीडेंट से दोनों पैर बराबर इस ढंग से तो नहीं कट सकते। तू युवक लड़का, इस उम्र में तेरी दोनों टाँगें कैसे कटीं ?''

युवक ने आँसू बहाते हुए कहा : ''साहब ! मैंने अपने हाथ से ही ये दोनों टाँगें काटी हैं।''

यह सुनकर नारायण शर्मा का वह साथी चकित रह गया।

''अपने पैर जानबूझकर कोई क्यों काटेगा ? सच बताओ क्या हुआ।''

लड़का बोला : ''साहब ! जरा मेरी कहानी सुनो। मैं गरीब घर का लड़का था, बकरियाँ चराता था। मेरे स्वभाव में ही हिंसा थी, क्रूरता थी। कोई जीव-जंतु देखता, पक्षियों या जानवरों को देखता तो पत्थर मारता था। जैसे शैतान छोरे निर्दोष कुत्तों को देखकर पत्थर मार देते हैं, पक्षियों को पत्थर मार देते हैं, ऐसा मेरा शौक था। जंगल में बकरियाँ चर रही थीं। कुल्हाड़ी मेरे कंधे पर थी। मैं इधर-उधर घूमता-घामता घनी झाड़ियों की ओर निकल गया। वहाँ एक हिरनी ने उसी दिन बच्चे को जन्म दिया था।

मुझे देखकर मेरी कुल्हाड़ी और क्रूरता से भयभीत हिरनी तो प्राण बचा के वहाँ से भाग गयी, बच्चा भाग नहीं सका। मैं इतना क्रूर और नीच स्वभाव का था कि मैंने अपनी कुल्हाड़ी से हिरनी के नवजात बच्चे की चारों-की-चारों टाँगें घुटनों के ऊपर से काट डालीं। उस समय मुझे क्रूरता का मजा आया।

वहाँ कोई देखनेवाला नहीं था। ३०२ और ३०७ की कलम वह हिरनी का बच्चा कहाँ से लगवायेगा और सरकार भी क्या लगायेगी ? लेकिन एक ऐसी सरकार है कि सारी सरकारों के कानूनों को उथल-पुथल करके सृष्टि चला रही है। यह मुझे अब पता चला। वहाँ कोई नहीं था फिर भी कर्म का फल देनेवाला वह अंतर्यामी देव कितना सतर्क है !

मैंने हिरनी के बच्चे के पैर तो काटे लेकिन एकाध महीने में ही मेरे पैरों में पीड़ा चालू हो गयी। मैं १५-१६ साल का युवक इलाज कर-करके थक गया। माँ-बाप को जो कुछ दम लगाना था, लगा लिया। बाबूजी ! मैं जयपुर के अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों ने कहा कि 'अगर लड़के को बचाना है तो इसके पैर कटवाने पड़ेंगे, नहीं तो यह मर जायेगा।' मैंने दोनों पैर कटवा दिये। साहब ! मैंने अपनी टाँगें आप ही काटी हैं।...

जब हिरन के बच्चे की टाँगें मैंने काटीं उस समय किसीने नहीं देखा था, फिर भी उस समय सबके कर्मों का हिसाब रखनेवाला, सब कुछ देखनेवाला परमात्मा था। दो टाँगें तो मेरी कट गयीं, दो हाथ कटने बाकी हैं क्योंकि मैंने उसकी चारों टाँगें काटी थीं।

मेरी टाँगें जब कट गयीं तो मैं किसी काम का न रहा। घरवाले मुझे इस तीर्थ में भीख माँगने के लिए छोड़ गये। कोई किसीका नहीं है। यह स्वार्थी जमाना... जब तक कोई किसीके काम आता है तब तक रखते हैं, बाद में सब एक-दूसरे से मुँह मोड़ लेते हैं।

चोटें खाने के बाद मुझे पता चला कि कर्म का सिद्धांत अकाट्य है। अब मैं मानता हूँ कि शुभ और अशुभ कर्म कर्ता को छोड़ते नहीं। अभी संतों के चरणों में मेरी श्रद्धा हुई, काश ! पहले होती तो मेरी यह दुर्गति नहीं होती। पैर कटने से पहले, भिखमंगा होने से पहले अगर सत्संग सुनता तो मैं हिंसक, क्रूर और मोहताज न बनता। सत्संग से मेरा हिंसा, क्रूरता का स्वभाव छूटकर सेवा और सज्जनता का स्वभाव हो जाता।''- ऐसा कहकर वह रो पड़ा।

नारायण शर्मा के मित्र ने कहा कि 'उस लड़के की दैन्य दशा देखकर लगा कि सृष्टिकर्ता कितना न्यायप्रिय, कितना सक्षम और कितना समर्थ है!' □

ज्ञानवर्धक पहेलियाँ

(१) इसके रंग में जो रँग जाय,
ईश्वर को वह जाता भूल।
सर्व व्याधियों का मूल कहाता,
भवरोग का वह देता शूल॥

(२) दो अक्षर का मेरा नाम,
दोषारोपण है मेरा काम।
घर-हृदय में आग लगाती,
सब पापों में वरिष्ठ कहाती॥

(३) सात जन्मों की दरिद्रता मिटाता,
परमात्मा की प्राप्ति कराता।
त्रिदेव इसीसे पाते सत्ता-सामर्थ्य,
ध्यान से परमात्मा साकार होता॥

(४) मस्त रहने की यह अनोखी युक्ति,
बिन बोले मिलती आनंद की कुंजी।
गुण-दोषों से बचने का अनोखा साधन,
इसके अवलम्बन से मन होता पावन॥

ढूँढ़ो तो जानें

'आदित्यहृदय स्तोत्र' में १०-११वें श्लोक में दिये गये सूर्य भगवान के नामों में से १२ नामों के अर्थ नीचे दिये जा रहे हैं। उनके आधार पर वर्ग-पहेली में से वे नाम खोजिये।

(१) अदितिपुत्र (२) जगत को उत्पन्न करनेवाले (३) सर्वव्यापक (४) आकाश में विचरनेवाले (५) पोषण करनेवाले (६) प्रकाशक (७) ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बीज (८) रात्रि का अंधकार दूर कर प्रकाश फैलानेवाले (९) हजारों किरणों से सुशोभित (१०) सात घोड़ोंवाले (११) कल्याण के उद्गम स्थान (१२) ब्रह्मांड को जीवन प्रदान करनेवाले।

म	ख	ष्ट	मा	न	ज	बि	द्दि	ल	अ	सू	ति
ग	रि	स	च	प	रं	डी	पः	स	र	तु	र्य
र	श	दा	वि	क	र	प्ति	क्रां	ति	र्चि	च	अ
गी	र्णि	ह	ङ्क	ता	क्षा	स	दी	स्रा	अ	श	त
षा	क्ष	श	रे	व	बं	प्त	ह	प्ति	ष्ठ	णे	च्छि
पू	हा	ण्य	पु	म	ध	स	हो	दी	पः	ग	चे
र	र	बा	त्य	स्त	न	वे	पा	गु	रो	श्रे	टी
हि	गु	क	रु	प्ति	म	श	डा	क	र्थ	भा	चं
यं	आ	ज	वा	भ	आ	के	म्भु	र	नु	पा	ड
ज	वा	ड़	प	दि	गु	व	न	पू	ल	ल	ग
ता	वृ	र्थी	त्य	ग	ङ	ति	क	ण्ड	र्त	मा	घ
गी	त	भ	चं	र	र्ष	मा	पि	क्र	बु	प	घ

अंक २४० की पहेलियों के उत्तर

ज्ञानवर्धक पहेलियाँ (पृष्ठ १२)

(१) आत्मा (२) शबरी (३) अष्टावक्रजी महाराज

ढूँढ़ो तो जानें (पृष्ठ २६)

भगवान कहते हैं : ''मैं महर्षियों में भृगु, यज्ञों में जपयज्ञ, स्थिर रहनेवालों में हिमालय, वृक्षों में पीपल, देवर्षियों में नारद, गंधर्वों में चित्ररथ, सिद्धों में कपिल मुनि, घोड़ों में उच्चैःश्रवा, हाथियों में ऐरावत और मनुष्यों में राजा हूँ।''

'मातृ-पितृ पूजन दिवस' पर पूज्य बापूजी का विश्वव्यापी संदेश

ब्रह्मसंकल्प

१४ फरवरी 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' को अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनायेंगे, एकदम व्यापक करेंगे। हिन्दू, ईसाई, यहूदी, मुसलमान सभी चाहते हैं कि हमारे बेटे-बेटी लोफर न हों। कोई माँ-बाप ऐसा नहीं चाहते कि हमारी संतानें लोफर हों, हमारे मुँह पर लात मारें, आवारा की नाईं भटकें। तो सभीकी भलाई का मैंने संकल्प किया है। 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' में पंच महाभूत, देवी-देवता, मेरे साधक और मुसलमान, हिन्दू, ईसाई, पारसी सभी जुड़ जायें - ऐसा संकल्प मैं आकाश में फैला रहा हूँ। देवता सुन लें, यक्ष सुन लें, गंधर्व सुन लें, पितर सुन लें कि भारत और विश्व में 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का कार्यक्रम मैं व्यापक करना चाहता हूँ और सभी लोग अपने माता-पिता का सत्कार करें, ऐसा मैं एक अभियान चलाना चाहता हूँ। आप सभी इसमें प्रसन्न होंगे और सहभागी होंगे।

सरकारों को संदेश

छत्तीसगढ़ सरकार ने तो अध्यादेश जारी किया बापू का सत्संग सुनते ही। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री और दूसरे मंत्रियों ने वचन घोषित किया कि 'हमारे छत्तीसगढ़ में वेलेंटाइन डे नहीं मनाया जायेगा, सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों में 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाया जायेगा।' लड़के बेशर्मी करके माता-पिता का अपमान न करें और लफंगे-लफंगियोंवाली जिंदगी, तबाही करनेवाली जिंदगी न जियें, ऐसा सरकारी कानून बने। **मैं तो देशभर के मुख्यमंत्रियों और दुनिया के लोगों को भी संदेशा देता हूँ कि वेलेंटाइन डे मनाकर बच्चे-बच्चियाँ तबाही के रास्ते न जायें बल्कि 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाकर बच्चों के जीवन में नित्य उत्सव, नित्य श्री और नित्य मंगल हो।**

बच्चों और उनके अभिभावकों को संदेश

मैंने मेरी माँ का आदर किया, मेरे पिता का आदर किया, मेरे गुरुजी का आदर किया तो लोग मेरा आदर करते हैं। तो माँ-बाप को तुच्छ नहीं मानें। इस विषय में बच्चों का ज्ञान बढ़े, ऐसी 'मातृ-पितृ पूजन' पुस्तक व वीसीडी भी है। इन्हें एक-दूसरे में बाँटो जिससे बच्चों में अच्छे संस्कार पड़ें। जरा-जरा बात में माँ-बाप की बात को ठुकरा के बच्चे मनमुख होकर फिर आगे चलकर अशांत होते हैं, खिन्न होते हैं। नित्य उत्सव के बदले नित्य गुस्सा, नित्य श्री की जगह नित्य दरिद्रता - 'यह चाहिए, यह चाहिए...' और नित्य मंगल की जगह नित्य खटपट। तो नित्य खटपट, नित्य दरिद्रता, नित्य झगड़े को हटाने के लिए बच्चों को अभी से 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' की महिमा समझाओ और १४ फरवरी को उसे मनाने की तैयारी करो।

दूसरी बात, अपने बेटे-बेटियों को, पड़ोस के बेटे-बेटियों को कंठ से ॐकार का गुंजन करने का प्रयोग ('मातृ-पितृ पूजन' पुस्तक, पृष्ठ ११) जरूर सिखाओ तो उनके जीवन में नित्य उत्सव, नित्य श्री और नित्य मंगल होने लगेगा और १४ फरवरी को वेलेंटाइन डे न मनाकर युवक-युवतियाँ बेचारे तबाही के रास्ते जाने से बचेंगे।

प्रसार माध्यमों को संदेश

वेलेंटाइन डे बच्चों और युवक-युवतियों की दिशा अंधकार की ओर मोड़ रहा है। आप उनको 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' की दिशा दो। आपसे यह चीज माँगता हूँ कि आपके पाठकों और दर्शकों के बच्चे तेजस्वी हों। बालक-बालिकाएँ, युवक-युवतियाँ अपने जीवन की शाम होने के पहले जीवन में जीवनदाता के प्रकाश को पायें। यह समाजरूपी देवता की सेवा है। ❑
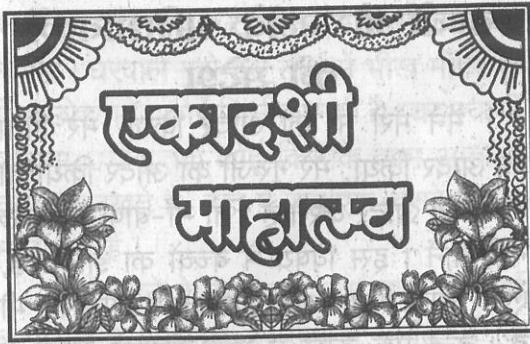
गुणवान व तेजस्वी पुत्र प्रदान करानेवाला व्रत

(पुत्रदा एकादशी : २२ जनवरी)

युधिष्ठिर बोले : ''श्रीकृष्ण ! कृपा करके पौष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का माहात्म्य बताइये । उसका नाम व विधि क्या है ? उसमें किस देवता का पूजन किया जाता है ?''

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा : ''राजन् ! पौष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम 'पुत्रदा' है । पुत्रदा एकादशी को नाम-मंत्रों का उच्चारण करके फलों के द्वारा तथा धूप-दीप से भगवान नारायण की अर्चना करें । इस दिन विशेष रूप से दीपदान करने का विधान है । रात को वैष्णव पुरुषों (श्रद्धा-भक्तिभाववाले साधकों) के साथ जागरण करना चाहिए । जागरण करनेवाले को जिस फल की प्राप्ति होती है, वह हजारों वर्षों तक तपस्या करने से भी नहीं मिलता । यह सब पापों को हरनेवाली उत्तम तिथि है ।

पूर्वकाल की बात है, भद्रावतीपुरी में राजा सुकेतुमान को बहुत समय तक कोई वंशधर पुत्र नहीं हुआ । इसलिए राजा-रानी दोनों सदा शोक में डूबे रहते थे ।

एक दिन राजा गहन वन में चले गये और वहाँ भ्रमण करने लगे । दोपहर होने पर भूख और प्यास सताने लगी । जल की खोज में इधर-उधर भटकते हुए उन्हें एक उत्तम सरोवर दिखाई दिया, जिसके समीप मुनियों के बहुत-से आश्रम थे । सरोवर के तट पर अनेक मुनि वेदपाठ कर रहे थे । राजा ने हाथ जोड़कर बारम्बार उन्हें दंडवत् किया, तब मुनि बोले : ''राजन् ! हम लोग तुम पर प्रसन्न हैं ।''

राजा बोले : ''आप लोग कौन हैं ? आपके नाम क्या हैं तथा आप लोग यहाँ किसलिए एकत्रित हुए हैं ? कृपया यह सब बताइये ।''

''राजन् ! हम लोग विश्वेदेव (चरित्रवान, सदाचारी, व्यसनमुक्त ब्राह्मण) हैं । आज से पाँचवें दिन माघ का स्नान आरम्भ हो जायेगा, अतः यहाँ स्नान के लिए आये हैं ।''

''विश्वेदेवगण ! यदि आप लोग मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे पुत्र दीजिये ।''

''राजन् ! आज पुत्रदा नाम की एकादशी है जो व्रत करनेवाले मनुष्यों को पुत्र देती है । तुम आज इस उत्तम व्रत का पालन करो । भगवान केशव के प्रसाद से तुम्हें पुत्र अवश्य प्राप्त होगा ।''

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : ''युधिष्ठिर ! इस प्रकार राजा ने विधिपूर्वक पुत्रदा एकादशी का अनुष्ठान किया । फिर द्वादशी को पारण करके मुनियों के चरणों में बारम्बार मस्तक झुकाकर अपने घर आये । तदनंतर रानी ने तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया जिसने अपने गुणों से पिता को संतुष्ट किया ।

इसलिए राजन् ! पुत्रदा एकादशी का उत्तम व्रत अवश्य करना चाहिए । जो मनुष्य एकाग्रचित्त होकर पुत्रदा एकादशी का व्रत करते हैं, वे इस लोक में पुत्र पाकर मृत्यु के पश्चात् स्वर्गगामी होते हैं । इस माहात्म्य को पढ़ने और सुनने से अग्निष्टोम यज्ञ का फल मिलता है ।''

सर्वपापनाशक व स्वर्ग की प्राप्ति करानेवाला सुअवसर

(षट्तिला एकादशी : ६ फरवरी)

युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से पूछा : ''भगवन् ! माघ मास के कृष्ण पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है ? उसके लिए कैसी विधि है तथा उसका फल क्या है ? कृपा करके ये सब बातें बताइये ।''

श्रीभगवान बोले : ''नृपश्रेष्ठ ! माघ (गुजरात-महाराष्ट्र के अनुसार पौष) मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी 'षट्तिला' के नाम से विख्यात है, जो सब पापों का नाश करनेवाली है । मुनिश्रेष्ठ पुलस्त्य ने इसकी जो पापहारिणी कथा दाल्भ्य से कही थी, उसे सुनो ।

दाल्भ्य ने पूछा : ''ब्रह्मन् ! मृत्युलोक में आये हुए प्राणी प्रायः पापकर्म करते रहते हैं । उन्हें नरक में न जाना पड़े इसके लिए कौन-सा उपाय है ? बताने की कृपा करें ।''

पुलस्त्यजी बोले : ''महाभाग ! माघ मास में मनुष्य पवित्र हो इन्द्रियसंयम रखते हुए काम, क्रोध आदि बुराइयों को त्याग दे । रात को जागरण और होम करे । चंदन, अरगजा, कपूर, नैवेद्य आदि सामग्री से शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाले देवदेवेश्वर श्रीहरि की पूजा करे । कुम्हड़े, नारियल अथवा बिजौरे के फल से भगवान को विधिपूर्वक पूजकर अर्घ्य दे । अर्घ्य का मंत्र इस प्रकार है :

कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमगतीनां गतिर्भव ।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ॥
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ।
सुब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु महापुरुष पूर्वज ॥
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पते ।

'सच्चिदानंदस्वरूप श्रीकृष्ण ! आप बड़े दयालु हैं । हम आश्रयहीन जीवों के आप आश्रयदाता होइये । पुरुषोत्तम ! हम संसार-समुद्र में डूब रहे हैं, आप हम पर प्रसन्न होइये । कमलनयन ! विश्वभावन ! सुब्रह्मण्य ! महापुरुष ! सबके पूर्वज ! आपको नमस्कार है ! जगत्पते ! मेरा दिया हुआ अर्घ्य आप लक्ष्मीजी के साथ स्वीकार करें ।' **(पद्म पुराण, उ. खंड : ४४.१८-२०)**

'तिल से स्नान-होम करे, तिल का उबटन लगाये, तिल मिलाया हुआ जल पिये, तिल का दान करे और तिलमिश्रित भोजन करे ।'

(पद्म पुराण, उ. खंड : ४४.२४)

इस प्रकार छः कामों में तिल का उपयोग किये जाने के कारण यह एकादशी षट्तिला कहलाती है, जो सब पापों का नाश करनेवाली है ।'' □

सब नाटक है

- पूज्य बापूजी

जैसे सूई दो कपड़ों से पसार होकर उन्हें जोड़ देती है, ऐसे ही जगत और ब्रह्म के विचार में घूमते-घूमते बुद्धि जीव-ब्रह्म को एक कर देती है । जब जीव-ब्रह्म की एकता हो जाती है तो फिर संसार दिखेगा लेकिन उसमें सत्यबुद्धि नहीं रहेगी और सत्यबुद्धि नहीं है तो नाटक में हँसो तो भी आनंद है, रोओ तो भी आनंद है । कोई मर गया है, 'हाय ! हाय !!' करो तो भी आनंद है । नाटक है न ! नाटक में जो भी काम करते हैं, बाद में उस पर हँसते हैं न ! नाटक में 'मेरा बेटा मर गया, इकलौता था...' ऐसा करके अभी छाती पीटकर आयी, बाहर आ के हँसती है । 'मेरे पति ने निकाल दिया... मैं विधवा हो गयी हूँ... मेरा पति मर गया... मेरी पत्नी मर गयी...' सब करते हैं नाटक में, फिर भी उनको कोई दुःख नहीं होता । ऐसे ही 'संसार सपना है, उसको जाननेवाला निर्दुःख चैतन्य अपना है'- यह ज्ञान गुरु की कृपा से हो जाता है तो शिष्य सुख-दुःख से पार हो जाता है । □

यौवन का मूल : संयम-सदाचार

- पूज्य बापूजी

(गतांक से आगे)

चाय-कॉफी की जगह ऋतु के अनुकूल फलों का सेवन अच्छा स्वास्थ्य-लाभ तो देता ही है, शरीर को पुष्ट भी करता है । सात्त्विक एवं अल्प आहार भी ब्रह्मचर्य की रक्षा में सहायक है । कम खाने का मतलब यह नहीं कि तुम २०० ग्राम खाते हो तो १५० ग्राम खाओ । नहीं, यदि तुम एक किलो पचा सकते हो और विकार उत्पन्न नहीं होता तो ९९० ग्राम खाओ । किंतु तुम पचा सकते हो २०० ग्राम तो २१० ग्राम मत खाओ । इससे ब्रह्मचर्य की रक्षा में सहायता मिलती है और उससे व्यक्ति में सामर्थ्य एवं सब सद्गुण सहज विकसित होते हैं ।

जहाँ चाह वहाँ राह ।

जहाँ मन की गहरी चाह होती है, आदमी वहीं पहुँच जाता है । अच्छे कर्म, अच्छा संग करने से हमारे अंदर अच्छे विचार पैदा होते हैं, हमारे जीवन की अच्छी यात्रा होती है और बुरे कर्म, बुरा संग करने से बुरे विचार उत्पन्न होते हैं एवं जीवन अधोगति की ओर चला जाता है ।

हर महान कार्य कठिन है और हलका कार्य सरल । उत्थान कठिन है और पतन सरल । पहाड़ी पर चढ़ने में परिश्रम होता है पर उतरने में परिश्रम नहीं होता । पतन के समय जरा भी परिश्रम नहीं करना पड़ता है लेकिन परिणाम दुःखद होता है... सर्वनाश ! उत्थान के समय आराम नहीं होता, परिश्रम लगता है किंतु परिणाम सुखद होता है । कोई कहे कि 'इस जमाने में बचना मुश्किल है... कठिन है...' पर 'कठिन है...' ऐसा समझकर अपनी शक्ति को नष्ट करना यह कहाँ की बुद्धिमानी है ?

गयी सो गयी, राख रही को...

मन का स्वभाव है नीचे के केन्द्रों में जाना । आदमी विकारों में गिर जाता है फिर भी यदि उसमें प्रबल पुरुषार्थ हो तो वह ऊपर उठ सकता है । इस जमाने में भी ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने संयम किया है और संयम से बलवान हुए हैं ।

पुरुषार्थ से सब सम्भव है लेकिन 'कठिन है... कठिन है...' ऐसा करके कठिनता को मानसिक सहमति दे देते हैं तो हमारे जीवन में कोई प्रगति नहीं होती । ध्रुव ने यदि सोचा होता कि 'प्रभुप्राप्ति कठिन है...' तो ध्रुव को प्रभु नहीं मिलते । प्रह्लाद ने यदि ऐसा सोचा होता कि 'भगवद्-दर्शन कठिन है...' तो उसके लिए भगवत्प्राप्ति कठिन हो जाती ।

हम किसी कार्य को जितना 'कठिन है... कठिन है...' ऐसा समझते हैं, वह कार्य कठिन-कठिन ही लगने लगता है लेकिन हम कठिन को कठिन न समझकर पुरुषार्थ करते हैं तो सफल भी हो सकते हैं । प्रयत्नशील आदमी हजार बार असफल होने पर भी अपना प्रयत्न चालू रखता है तो भगवान उसको अवश्य मदद करते हैं ।

हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा ।

नष्ट-भ्रष्ट-निस्तेज जीवन के कगार पर पहुँचे हुए कई युवक-युवतियों को किन्हीं पुण्यात्मा साधकों के द्वारा आश्रम की 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश', 'पुरुषार्थ परम देव' पुस्तकें पढ़ने को मिलीं तो उनका जीवन बदल गया । युवाधन को बचाने के लिए, देश के भावी नागरिकों को तेजस्वी बनाने के लिए आश्रम से जुड़े हुए सभी पुण्यात्मा अपने-अपने इलाकों में व्यक्तिगत रूप से युवक-युवतियों को 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक पाँच बार पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें । यह छोटा-सा दिखनेवाला काम अपने-आपमें एक बहुत बड़ा पुण्यकार्य है । एक युवक या युवती की जिंदगी चमकी तो उसका पूरा परिवार और पड़ोस भी लाभान्वित होगा । □

(आवरण पृष्ठ २ से 'दबंग बापू' का शेष)

दबंग चुनौती

आपने चुनौती भी दी तो सीधे ईश्वर को : ''मुझे भले तुम्हें पाने के लिए खूब यत्न करने पड़ रहे हैं किंतु तू मुझे एक बार मिल जा, मैं तुम्हें सस्ता बना दूँगा ।'' और क्या दबंगई है कि पाया भी और चैलेंज निभाया भी !

दबंग मुहब्बत

एक दिन सुबह भूख लगी तो उस समय जंगल में रमते ये जोगी हठ कर बैठ गये : **'जिसको गरज होगी आयेगा, सृष्टिकर्ता खुद लायेगा ।'** और दो किसान दूध व फल लेकर हाजिर !

दबंग सत्संग

शरीर की ७२ वर्ष की उम्र में भी - बापूजी एक... पूनम एक... और पूनम दर्शन-सत्संग ४-४ जगह ! हर जगह, हररोज हवा-पानी का बदलाव और सतत भ्रमण... फिर भी अजब स्फूर्ति, अजब मस्ती, अजब नृत्य और नित्य उत्सव... भारत में ही नहीं पाकिस्तान के 'गाजी गार्डन' में भी अभूतपूर्व उत्सव ! 'विश्व धर्म संसद' में भी भारत का दबंग नेतृत्व ! वहाँ के सबसे प्रभावशाली वक्ता, सत्संग के लिए दूसरों से कहीं ज्यादा समय ! सब कुछ दबंग !

दबंग प्रेरणास्रोत

लौकिक पढ़ाई कक्षा ३ तक लेकिन आध्यात्मिक अनुभूति का ज्ञान अद्भुत ! तभी तो कई डी.लिट्., पीएच.डी., आईएएस आदि तथा कई राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, खिलाड़ी, वैज्ञानिक एवं सुप्रसिद्ध हस्तियाँ चरणों में शीश झुकाकर भाग्य चमका लेती हैं ।

दबंग पहल

१४ फरवरी को 'वेलेंटाइन डे' के स्थान पर 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का विश्वव्यापी अभियान आपने शुरू किया, जिसको आज समाज के सभी धर्म, सभी मत-पंथ, सम्प्रदायों के साथ सभी क्षेत्र के अग्रणियों, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्रियों का भी समर्थन प्राप्त हुआ है । महाराजश्री की इस दबंग पहल का समर्थन करते हुए छत्तीसगढ़ सरकार ने इसे राज्यस्तरीय पर्व घोषित कर दिया है ।

दबंग समता, धैर्य

'साँच को आँच नहीं और झूठ को पैर नहीं ।'

करोड़ों रुपये खर्च करके मीडिया के द्वारा किये गये दुष्प्रचार के तमाम षड्यंत्रों में भी सम, निश्चित, प्रसन्न बापूजी का धैर्य लाबयान है । आखिर सर्वोच्च न्यायालय ने भी महाराजश्री व आश्रम पर लगे आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया ।

दबंग चमत्कार

२९ अगस्त २०१२ को गोधरा (गुज.) में बापूजी का हेलिकॉप्टर क्रैश हुआ । मजबूत धातु के भारी-भरकम पुर्जों से बने हेलिकॉप्टर के तो टुकड़े-टुकड़े हो गये लेकिन अंदर बैठे बापूजी और सभी शिष्यों के कोमल शरीरों का पुर्जा-पुर्जा चुस्त-तंदुरुस्त रहा । जबकि आज तक की हेलिकॉप्टर क्रैश दुर्घटनाओं का इतिहास बड़ा रक्तरंजित है । हादसे के तुरंत बाद बापूजी ने भक्तों के बीच पहुँचकर दबंग सत्संग भी किया । **हेलिकॉप्टर हुआ चूर-चूर, दबंग बापूजी ज्यों-के-त्यों भरपूर !**

दबंग अठखेलियाँ

अपने उस दिलबर 'यार' के साथ महाराजश्री कभी-कभी बड़ी दबंगई से एकांत में अठखेलियाँ करते हैं । मुहब्बत जब जोर पकड़ती है तो शरारत का रूप ले लेती है । संतश्री कहते हैं :

''कभी-कभी तो मैं कमरे में ही चिल्लाता रहता हूँ, ''ऐ हरि... !'' मजा आता है । मुझे पता है कि वह कहीं गया नहीं, दूर नहीं । इतनी बड़ी हस्ती जिसके बड़प्पन का कोई माप नहीं, उसको चिल्लाकर बुलाता हूँ, ''ऐ हरि... !'' तो भीतर से आवाज आती है - हाँ, हाजिर है ।''

इन महाराज का कसम खाने का तरीका भी बड़ा दबंग है । ये अलमस्त औलिया लाखों की भीड़

के सामने कसम खाते हैं : ''यदि मैं झूठ बोलूँ तो तुम सब एक साथ मरो ।'' है किसीकी हिम्मत ऐसी कसम खाने की ? और उसी क्षण सामने उपस्थित लाखों का जनसागर आनंदित-आह्लादित हो जाता है । क्या दबंग प्रेमभरी अठखेलियाँ हैं !

दबंग पोल-खोल

ये महाराज ऐसे दबंग हैं कि भगवान की एक-एक 'नस' जानते हैं, 'प्लस' तो क्या 'माइनस' भी जानते हैं। मिल गये ऐसे मस्त दबंग कि भगवान पूरे-के-पूरे बेपर्दा हो गये, अपने 'वीक प्वाइंट' भी इनसे छुपा नहीं पाये । और आपका जीवन तो ऐसी खुली किताब है कि आप यह 'प्राइवेट बात' भी भक्तों से, श्रोताओं से छुपा नहीं पाये । खोल दी पूरी पोल और पढ़ा दी ऐसी पट्टी कि अब काल भी भक्तों का बाल बाँका नहीं कर सकता । और इससे वह अकाल, सर्वसुहृद 'यार' भी खुश है बेशुमार ! यह है वह दबंग पोल-खोल :

''आप भगवान को कह दो कि हम नहीं मरते, हम क्यों मरेंगे ! मरता हमारा शरीर है । हमको आप भी नहीं मार सकते, हम तो आपके सनातन अंश हैं । हम आपको नहीं छोड़ सकते तो आप भी हमें नहीं छोड़ सकते लाला ! अब हम जान गये, बलमा को पहचान गये । हम संसार को रख नहीं सकते और आपको छोड़ नहीं सकते और आप भी संसार को एक-जैसा नहीं रखते और हमें छोड़ नहीं सकते । भगवान को चुनौती दो कि आप हमें छोड़ के दिखाइये ।''

भगवान को स्वयं चुनौती देनेवाले और भक्तों-साधकों से भी दिलानेवाले कैसे दबंग हैं ये महाराज !

महाराज की खुली चुनौती है : **''अगर है किसीमें ताकत तो ईश्वर के साथ का संबंध तोड़ के दिखा दे । मैं उसका चेला बन जाऊँगा और मेरे सारे आश्रम और सारे शिष्य उसको समर्पित कर दूँगा ।''**

भगवान के प्लस और माइनस प्वाइंट्स बताकर आप अपने दिव्य 'पॉवर हाउस' से कुंडलिनी शक्तिपात की ऐसी दबंग वर्षा कर देते हैं कि सामने बैठे हुए हजारों शिविरार्थियों की कुंडलिनी जागृत हो जाती है और उनके जीवन में ज्ञान और आनंद का उजाला-ही-उजाला हो जाता है। जीवन का हर पल, हर लमहा दबंग उत्सव बन जाता है।

अखिल भारतीय 'ऋषि प्रसाद' सेवादार सम्मेलन-२०१३

सप्रेम आमंत्रण

सेवादार पुण्यात्माओ !

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी उत्तरायण पर्व के पावन अवसर पर 'ऋषि प्रसाद' के सेवादारों का अखिल भारतीय वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया है । यह १२ जनवरी को अहमदाबाद आश्रम में एवं १६ जनवरी को प्रयागराज में सत्संग-स्थल पर होगा । वर्षभर 'ऋषि प्रसाद' की सेवा में रत रहनेवाले सेवादारों हेतु यह एक दुर्लभ अवसर होगा, जिसमें 'ध्यान योग शिविर', कुम्भ पर्व के साथ-साथ सेवा से संबंधित विशेष सभा एवं कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जायेगा। सभी सेवादार इस अनुपम अवसर पर सादर आमंत्रित हैं ।

'घर-घर अलख जगाओ अभियान' के द्वितीय चरण के सफल सेवादारों के लिए विशेष प्रबंध किया गया है । सम्मेलन का प्रवेश-पास 'ऋषि प्रसाद' के क्षेत्रीय कार्यालय से प्राप्त करें ।

- 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय, अहमदाबाद

सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७४१

आवश्यक सूचना

'ऋषि प्रसाद' का देहरादून कार्यालय केवल डाक प्रेषण कार्य तक सीमित है, अतः कृपया उस पते पर कोई भी पत्राचार न करें । पत्राचार हेतु 'सम्पर्क पता' पृष्ठ ३ पर देखें ।

सेवामूर्ति श्री मणिकाकाजी को श्रद्धांजलि

श्री मणिभाई शंकरभाई पटेल (मणिकाकाजी) नियमनिष्ठा, सादगी, करकसर व निःस्वार्थ सेवा की साक्षात् मूर्ति थे। उनका जीवन बड़ा ही संयमित व सुसंस्कारित था। सेवा में उनका उत्साह, लगन व तत्परता सभीको गुरुसेवायोग की महिमा समझने के लिए प्रेरणा-दीप का कार्य करती रही है और आगे भी करती रहेगी ।

पारिवारिक जीवन

आश्रम में आने से पहले मणिकाका गृहस्थ-जीवन व्यतीत कर रहे थे । बापूजी के प्रति उनका अगाध प्रेम था । घर की आर्थिक स्थिति खराब होने पर भी वे आश्रम आने-जाने का खर्च अपने वेतन से पहले ही निकाल लेते थे तथा अपना कार्य जल्दी निपटाकर सप्ताह में दो दिन आश्रम में सेवा करने के लिए सुरक्षित रखते थे ।

उनकी बेटी चन्द्रिकाजी बताती हैं : ''पिताजी को आश्रम जाने से रोकने के कई बहाने माँ बनाती लेकिन वे कोई-न-कोई रास्ता ढूँढ ही लेते थे । माँ कहती, 'मेरे साथ खेत में चलो, वहाँ बहुत काम है । आश्रम जाकर अपना समय बरबाद क्यों करते हो ?'

पिताजी रात को ढाई बजे खेत में पहुँचकर सारा काम निपटा देते । माँ बहाने बनाती, 'आश्रम जाते हो तो जाओ लेकिन बच्चों को कौन देखेगा, नहलायेगा कौन ? मैं तो खेत में देखभाल के लिए चली जाऊँगी ।' पिताजी हम लोगों को नहलाकर, भोजन-पानी की व्यवस्था करके आश्रम पहुँचते और सेवा में लग जाते ।''

कुछ समय बाद वे अपनी धर्मपत्नी को 'ध्यानयोग शिविर' में ले आये । बापूजी की एक झलक पाकर उन्हें भी दिव्य अनुभूति हुई और उन्होंने भी दीक्षा ले ली ।

आश्रम जीवन

वैसे तो काकाजी दीक्षा लेने के उपरांत ही आश्रम में समर्पित जीवन बिताने के इच्छुक थे परंतु पारिवारिक जिम्मेदारी तथा घर की तंग आर्थिक स्थिति के कारण वे ऐसा नहीं कर पाते थे । सन् १९९२-९३ में जब वे सेवानिवृत्त हुए तब बिना समय गँवाये तुरंत पंचेड़ (म.प्र.) आश्रम में आ गये । पूज्य बापूजी ने मणिकाका को १९९७ में करोलबाग-दिल्ली आश्रम के संचालन की सेवा दी ।

नियमनिष्ठा

रात को नौ बजे सोने का उनका नियम था । प्रतिदिन प्रातः ३-३० बजे उठकर स्नान आदि से निवृत्त हो वे जप-पाठ में बैठ जाते । सत्संग सुनने का भी उनका नित्य-नियम था । पूज्य बापूजी ने जो नियम दिये थे, उन्हें वे पूरी निष्ठा से जब तक शरीर ने साथ दिया तब तक निभाते रहे ।

सच्चे कर्मयोगी...

मणिकाका सुबह ५-५.३० बजे से सेवा प्रारम्भ कर देते थे । ७०-७२ साल की आयु में भी १२-१२ घंटे सेवा में लगे रहते थे । वे अपनी सेवा निर्धारित समय से पहले पूरी करके फिर दूसरों की सेवा में भी हाथ बँटाते थे । उनका शरीर दुबला-पतला था, आहार भी वे बहुत कम मात्रा में लेते थे परंतु जवान को भी मात कर दे ऐसी फुर्ती, जोश व तत्परता से सेवा करते थे । वे लोगों से खूब आत्मिक भाव से मिलते तथा सभीको गुरुदेव के दैवी कार्य में जुड़ने की प्रेरणा देते ।

बापूजी के प्रति अथाह प्रेम

मणिकाकाजी ने सेवानिष्ठा से अपने सद्गुरु पूज्य बापूजी के हृदय में स्थान बना लिया था । बापूजी उन्हें प्यार से 'मणिमल' व 'मणिरत्न' कहते थे । काका के मन में कोई भी बात उठती तो गुरुजी की कृपा से उसका समाधान हो जाता था । एक बार उनके मन में गुरुजी के चरणस्पर्श की लालसा हुई ।

उस समय बापूजी का सत्संग मथुरा में था । कुछ देर बाद ही गुरुजी का संदेश आया : ''मथुरा आ जा ।''

मथुरा पहुँचने पर बापूजी ने उनके सिर पर पुष्पों से बनी पगड़ी रखी और बोले : ''ले, चरण छू ले !''

एक बार पूनमदर्शन कार्यक्रम में सेवा में व्यस्तता के कारण काका पूज्य बापूजी का दर्शन नहीं कर पाये । रात्रि के ३ बजे वे स्नानागार में कपड़े धो रहे थे और गुरुदर्शन करने के लिए उनका चित्त व्याकुल हो रहा था । उसी समय दरवाजे पर दस्तक हुई । उन्होंने पूछा : ''कौन है ?''

आवाज आयी : ''तेरा बाप !''

वे तुरंत बाहर आये और अपने पूज्य गुरुदेव के दर्शन कर भाव-विभोर हो गये ।

बापूजी ने दिया पुनर्जीवन

एक बार काकाजी को शरीर का अंतकाल आने का आभास हुआ तो उन्होंने पूज्य बापूजी से दूरभाष पर शरीर छोड़ने की आज्ञा माँगी । तब गुरुदेव ने कहा : ''अभी नहीं । तुम रुको, मैं आता हूँ ।'' बापूजी दिल्ली आश्रम पधारे और उन्हें संकल्पशक्ति से पुनर्जीवन प्रदान किया । इसके बाद काकाजी ने बापूजी की आज्ञानुसार आश्रम का संचालन अन्य को सौंपकर निवृत्तिप्रधान जीवन जिया । तब उनका ज्यादा समय गीता-रामायण पठन व गुरुमंत्र-जप में ही जाता था ।

जिन गुरुदेव के आगमन के लिए भक्त सदैव पलकें बिछाये रहते हैं, ऐसे भक्तवत्सल पूज्य बापूजी अपना कृपामय सान्निध्य देने के लिए काकाजी के आखिरी दिनों में बार-बार दिल्ली आश्रम पधारते रहे ।

अंतिम क्षण गुरुदेव के सान्निध्य में...

जीवन का अंतिम समय उन्होंने मोडासा आश्रम (गुज.) में बिताया । बीमारी के समय उनके शरीर में मात्र ५५-६५ प्रतिशत ही ऑक्सीजन जा पा रही थी । उनका उपचार कर रहे चिकित्सक ने कहा : ''ऐसी स्थिति में तो आदमी जीवित नहीं रहता है । बापूजी की कृपा के कारण ही ये जीवित हैं ।'' शारीरिक पीड़ा व श्वास की तकलीफ के बावजूद उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी । लोगों से कहते : ''तुम जो देख रहे हो वह मैं नहीं हूँ और जो मैं हूँ वह तुम नहीं देख पा रहे हो ।''

करोड़ों भक्त जिनके दर्शन के लिए लालायित रहते हैं, ऐसे सबके प्यारे त्रिकालज्ञानी पूज्य बापूजी बिना किसी पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम के आखिरी समय में मणिकाका के पास मोडासा पहुँच गये । बापूजी ने उनसे कहा : ''अपना हाथ मुझे दे दे ।''

सद्‌गुरु शिष्य के पास आकर उसका हाथ माँगें, कितनी बड़ी जीवन की सार्थकता है ! गुरुगीता में भगवान शिव पार्वतीजी से कहते हैं :

गुरुसन्तोषणादेव मुक्तो भवति पार्वति ।

'हे पार्वती ! गुरुदेव को संतुष्ट करने से ही शिष्य मुक्त हो जाता है ।'

जीवनभर तो करुणासागर पूज्य बापूजी मणिकाका पर अपना वात्सल्य-प्रेम बरसाते ही रहे किंतु अंतिम क्षणों में भी उनके समीप आकर, उनका हाथ थाम के उन्हें उनकी जीवनभर की सारी तपस्याओं-सेवाओं के फल से भी कहीं अधिक दे डाला । कैसी है यह गुरुदेव की करुणा-कृपा ! यही नहीं, २६ नवम्बर २०१२ को जब उनका शरीर शांत हुआ तो पूज्यश्री की आज्ञानुसार उनके अंतिम संस्कार में तुलसी की लकड़ियों का भी उपयोग किया गया । उसमें भी अन्य लकड़ियों की अपेक्षा तुलसी की लकड़ियाँ अधिक थीं । भगवन्नाम-कीर्तन के साथ उनकी भव्य अंतिम यात्रा निकाली गयी । हँसते-खेलते, योगियों को भी दुर्लभ गति दे दी उन दाता ने ! ऐसे गुरुदेव की महिमा अवर्णनीय है जो जीवनभर तो साथ निभाते हैं, मृत्यु के समय भी साथ निभाते हैं । मृत्यु के बाद भी साथ निभाने का सामर्थ्य सद्‌गुरु के सिवा भला किसमें सम्भव है ! और धन्य हैं ऐसे गुरुभक्त भी जो गुरुदेव के हाथ में अपना हाथ दे निश्चिंत हो पाते हैं ।

सेवामूर्ति श्री मणिकाकाजी को समस्त साधक परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित है । ❑

पौष्टिक व बल-बुद्धिवर्धक तिल

तिल बलप्रदायक, बुद्धि व वीर्यवर्धक, जठराग्नि-प्रदीपक, वातशामक व कफ-पित्त प्रकोपक हैं । काले, सफेद और लाल तिलों में काले तिल श्रेष्ठ हैं । १०० ग्राम तिलों में १४५० मि.ग्रा. इतनी प्रचंड मात्रा में कैल्शियम पाया जाता है । जिससे ये अस्थि, संधि (जोड़ों), केश व दाँतों को मजबूत बनाते हैं ।

आयुर्वेद के अनुसार सभी तेलों में तिल का तेल श्रेष्ठ है, यह उत्तम वायुशामक है। अपनी स्निग्धता, तरलता और उष्णता के कारण शरीर के सूक्ष्म स्रोतों में प्रवेश कर यह दोषों को जड़ से उखाड़ने तथा शरीर के सभी अवयवों को दृढ़ व मुलायम रखने का कार्य करता है । टूटी हुई हड्डियों व स्नायुओं को जोड़ने में मदद करता है। कृश शरीर में मेद बढ़ाता है व स्थूल शरीर से मेद घटाता है । तिल के तेल की मालिश करके सूर्यस्नान करने से त्वचा मुलायम व चमकदार होती है, त्वचा में ढीलापन, झुर्रियाँ तथा अकाल वार्धक्य नहीं आता ।

तिल के औषधीय प्रयोग

✻ **रसायन-प्रयोग** : अष्टांग संग्रहकार श्री वाग्भट्टाचार्यजी के अनुसार १५ से २५ ग्राम काले तिल सुबह चबा-चबाकर खाने व ऊपर से शीतल जल पीने से सम्पूर्ण शरीर - विशेषतः हड्डियाँ, दाँत, संधियाँ व बाल मजबूत बनते हैं ।

✻ **बलवर्धक प्रयोग** : सफेद तिल भिगोकर, पीसकर, छान के उसका दूध बना लें । ५० से १०० ग्राम इस दूध में २५ से ५० ग्राम पुराना गुड़ मिलाकर नियमित लेने व १२ सूर्यनमस्कार करने से शरीर बलवान होता है ।

✻ तिल सेंककर गुड़ व घी मिला के लड्डू बना लें । एक लड्डू सुबह चबाकर खाने से मस्तिष्क व शरीर की दुर्बलता दूर होती है ।

✻ एक-एक चम्मच तिल व घी गर्म पानी के साथ रोज दो या तीन बार खाने से पुराने आँव, कब्ज व बवासीर में राहत मिलती है ।

तिल-सेवन की मात्रा : १० से २५ ग्राम ।

विशेष जानकारी : तिल की ऊपरी सतह पर पाया जानेवाला 'ऑक्जेलिक एसिड' कैल्शियम के अवशोषण में बाधा उत्पन्न करता है। इसलिए तिलों को पानी में भिगोकर, हाथों से मसल के ऊपरी आवरण उतार के उपयोग करना अधिक लाभदायी है।

सावधानियाँ : ✻ उष्ण प्रकृति के व्यक्ति, गर्भिणी स्त्रियाँ तिल का सेवन अल्प मात्रा में करें। अधिक मासिक-स्राव व पित्त-विकारों में तिल नहीं खायें।

✻ तिल, तिल के पदार्थ तथा तेल का उपयोग रात को नहीं करना चाहिए ।

✻ तिल के तेल का अधिक सेवन नेत्रों के लिए हानिकारक है।

सरल घरेलू उपचार

✻ **अच्छी नींद लाने तथा खर्राटे बंद करने के लिए** : रात को गाय का घी हलका-सा गरम करके १ से ४ बूँद दोनों नथुनों में डालें ।

✻ **उच्च रक्तचाप में** : रात को गुनगुने पानी में ५ से १५ ग्रा. मेथीदाना भिगा दें, सुबह छान के पानी पी लें। गाजर, सेब, केला, अमरूद, अनार, पालक आदि खायें तथा कच्ची दूधी (लौकी) का १५ से २५ मि.ली. रस पियें ।

✻ **दमा में** : आधा ग्राम दालचीनी का चूर्ण शहद या गुड़ के साथ दिन में १ या २ बार लें । लगातार ३ महीने तक लेने से लाभ होता है । ☐

पल-पल सहारा मिलता है...

आज से १४-१५ साल पहले मैंने टीवी पर पूज्य बापूजी का सत्संग सुना और उनके प्रत्यक्ष दर्शन की खूब इच्छा जागृत हो गयी । १-२ साल बाद इत्तेफाक से बापूजी से मेरी मुलाकात जोधपुर में हवाई जहाज में हो गयी, तब बापूजी ने मेरा नाम 'आत्मसुधा' रख दिया । जब भी मैं बापूजी को पुकारती हूँ, बापूजी मेरी पुकार सुनकर मेरी समस्या दूर कर देते हैं । ७-८ वर्ष पूर्व मेरे पतिदेव को रीढ़ की हड्डी के पास ट्यूमर हो गया था । डॉक्टरों ने कहा कि ९९.९९ प्रतिशत ये कैंसर के लक्षण हैं । मैंने बापूजी से प्रार्थना की तो बापूजी बोले : ''डॉक्टरों की बात एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देना । तेरे पति को कुछ नहीं होगा, मैं उन्हें अंदर से सँभालता हूँ और तुम बाहर से सँभाल करो ।'' मैं तो निश्चिंत हो गयी । जब रिपोर्ट आयी तो एम.डी. डॉक्टर हैरान रह गये कि ट्यूमर में सारे लक्षण कैंसर के दिख रहे थे लेकिन रिपोर्ट एकदम नॉर्मल ! यह सब बापूजी की कृपा का चमत्कार नहीं है तो और क्या है ?

आज से ४-५ माह पूर्व रात डेढ़-दो बजे मेरे पति की हृदयगति बहुत ज्यादा बढ़ जाने पर उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा । डॉक्टर ने हार्ट-अटैक के लक्षण बताये और उन्हें आईसीयू में भर्ती कर दिया । दूसरे दिन सीवुड (नवी मुंबई) में बापूजी का सत्संग था । मैं वहाँ पर गयी और बापूजी से प्रार्थना की : ''बापूजी ! मेरे पति को किसी भी प्रकार के ऑपरेशन या अनहोनी से बचा लीजिये ।''

बापूजी बोले : ''कुछ नहीं होगा, सब ठीक हो जायेगा ।''

अगले दिन डॉक्टर ने बताया कि ''अब ऑपरेशन की कोई जरूरत नहीं है ।''

मुझे पल-पल बापूजी ने सहारा दिया है । सचमुच, बापूजी की कृपा नहीं होती तो मैं भी तनावपूर्ण जीवन जीनेवाले निगुरे लोगों की तरह आत्महत्या या डिप्रेशन का शिकार हो गयी होती । हम सभी साधक सुख-शांति व आनंद में हैं क्योंकि बापूजी की कृपा सदैव हमारे ऊपर है । ऐसे कृपासिंधु पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में बार-बार नमन !

- आत्मसुधा, मुंबई

(आयात-निर्यात व इंटीरियर डेकोरेशन का व्यापार)

अमृतबिंदु

भगवान ने जो बुद्धि दी है उसका उपयोग बंधन काटने में करें, हृदय को शुद्ध करने में करें । यह तभी हो सकता है जब सत्संग से बुद्धि सुसंस्कारी होगी । सदा यही प्रयत्न करो कि जीवन में से सत्संग न छूटे, सद्गुरु का सान्निध्य न छूटे । सद्गुरु से बिछुड़ा हुआ साधक न जीवन के योग्य रहता है, न मौत के । **- पूज्य बापूजी**

विशेष सूचना

'उत्तरायण ध्यानयोग शिविर' (११ से १४ जनवरी) हेतु अहमदाबाद आनेवाले भक्तों के लिए अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से आश्रम आने-जाने हेतु वाहन-व्यवस्था की गयी है । यह सुविधा अहमदाबाद रेलवे स्टेशन के बाहर हनुमान मंदिर के पासवाले गेट से होकर सड़क पार करके सामने की तरफ उपलब्ध रहेगी ।

सम्पर्क : ९४२९२०९१७०, ९६३८१०५२९१.

संस्था समाचार

(‘ऋषि प्रसाद’ प्रतिनिधि)

२१ नवम्बर को सौभाग्य की प्रतीक मेंहदीनगरी **सोजत, जि. पाली (राज.)** में पहली बार हुए सत्संग में श्रद्धालुओं ने भगवद्रस, भगवद्-आनंद से अपने तन-मन को रँगा।

२१ नवम्बर को **गोपाष्टमी** के पावन दिन पूज्य बापूजी के निर्देशानुसार सभी आश्रमों की गौशालाओं में गौमाताओं को तेल से मालिश कर नहलाया गया तथा पूजन कर घास व बल-पुष्टिवर्धक लड्डू खिलाये गये। साथ ही गौशालाओं में भंडारों का आयोजन हुआ तथा हर वर्ष की भाँति अहमदाबाद आश्रम से लड्डू बनवाकर निकट के गाँवों में जा के गायों को खिलाये गये।

२२ नवम्बर को **पाली आश्रम (राज.)** में बापूजी के करकमलों से नवनिर्मित सत्संग-भवन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। यहाँ साधकों पर गुरुप्रेम का वात्सल्य बरसाते हुए पूज्यश्री बोले : ‘‘परमात्मा को धन्यवाद दो कि प्रभु ! आपने हमें सत्संग दिया है, वाह ! और हमें कोई डाँटनेवाले, समझानेवाले सद्गुरु भी दिये हैं। हमारी नासमझी पर तो गुरु नाराज होते हैं लेकिन हमको अंदर से प्यार करते हैं, हमको आत्मसाक्षात्कार कराना चाहते हैं।’’

२३ नवम्बर को **सुमेरपुर (राज.)** में सत्संग के बाद **२४ से २८ नवम्बर (सुबह तक)** पाँच दिवसीय पूनम दर्शन व सत्संग-कार्यक्रम हेतु **बडौदा** में पूज्यश्री का शुभागमन हुआ। सनातन संस्कृति के सूत्रधार बापूजी की अध्यक्षता में **२७ नवम्बर** को ‘वेलेंटाइन डे’ के स्थान पर ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ को विश्वव्यापी बनाने के लिए विशाल ‘प्रेरणा सभा’ का आयोजन हुआ। इसमें विभिन्न धर्माचार्यों, समाजसेवियों तथा अन्य क्षेत्रों की सुप्रसिद्ध हस्तियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा इसे विश्वव्यापी बनाने में सहयोग करने की घोषणा भी की। पूरे विश्व के लोगों ने इस सभा का जीवंत प्रसारण के माध्यम से लाभ लिया।

यहाँ प्रथम दो दिन **‘तेजस्वी युवा व विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविर’** के नाम रहे, जिसमें बापूजी ने ॐकार जप, यौगिक प्रयोगों तथा ध्यान द्वारा सुषुप्त शक्तियों को जागृत करने की सरल युक्तियाँ बताकर बालकों व युवाओं में नयी चेतना फूँक दी। शिविर में शांत बैठे युवाओं और विद्यार्थियों को देखकर सत्संग-स्थल का वातावरण पुराणों में वर्णित ऋषि आश्रम की खबरें दे रहा था। विघ्न-बाधाओं से मुक्ति का सरल उपाय बताते हुए पूज्य बापूजी बोले : ‘‘आधा घंटा ॐकार के गुंजन के साथ एकटक इष्ट या गुरुदेव के श्रीचित्र को देखते रहो तो आपको एक सप्ताह में ऐसी धृति (धैर्य; ग्रहण या धारण क्षमता) प्राप्त होगी कि व्यावहारिक विघ्न-बाधाओं और प्रलोभनों से आप प्रभावित न रहकर अपने आत्मा-परमात्मा के उद्देश्य में टिके रहोगे।’’

२८ नवम्बर (दोपहर) से २९ नवम्बर तक **रामलीला मैदान, दिल्ली** में पूनम दर्शन व सत्संग-कार्यक्रम हेतु उमड़े लाखों श्रद्धालु भक्तों को जीवन जीने की कला सिखाते हुए पूज्यश्री ने कहा : ‘‘कोयले की खान से पसार हों और आपको कालिख न लगे, ऐसे ही नश्वर संसार में रहते हुए भी नश्वर चीजों का आकर्षण न रहे और शाश्वत से मुख मोड़ने की गलती न रहे, ऐसे आप कुशल रहो।’’

२९ नवम्बर को यहाँ भी बापूजी के सान्निध्य में विशाल ‘प्रेरणा सभा’ का आयोजन हुआ। (वक्तव्य पढ़ें पृष्ठ ४ पर)

तत्पश्चात् पूज्यश्री **अहमदाबाद** पधारे। इस दौरान जुलाई २००८ में संत श्री आशारामजी गुरुकुल, अहमदाबाद में पढ़नेवाले दो बच्चों की अपमृत्यु मामले के संबंध में **१ दिसम्बर** को पूज्य बापूजी डी. के. त्रिवेदी जाँच आयोग पहुँचे। बापूजी के आगमन की खबर सुनकर एक ही दिन में

स्थानीय एवं आसपास के क्षेत्रों से भारी संख्या में श्रद्धालु उमड़े। उन्होंने अपने सद्गुरु की आरती उतारी, जयकारे लगाये। जब बापूजी ने वहाँ से आश्रम के लिए प्रस्थान किया तो पुष्पवर्षा से बापूजी की गाड़ी ढँक-सी गयी। आश्रम पहुँचकर पूज्यश्री ने श्रद्धालुओं की उत्सुकता को शांत करते हुए कहा : ''आज तक जो लोग कुछ-के-कुछ बे-सिरपैर के आरोप लगा रहे थे, कहानियाँ बना रहे थे और आश्रम की प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिलाने के जो सपने देख रहे थे, उन सबकी बदमुरादों पर पानी फिर गया। कहते हैं न **'सौ सुनार की, एक लुहार की'**, ऐसे ही सुनियोजित तरीके से जो भी झूठे आरोप लगाये गये थे, उन सब पर एक-एक घन (बड़ा हथौड़ा) लगता गया और सब लोगों को संतोष होता गया। सच्चाई की वाणी में ताकत होती है। **साँच को आँच नहीं, झूठ को पैर नहीं।** सभी आरोप निराधार साबित हुए। उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय ने भी सविस्तार निर्णय देकर सच्चाई और न्यायप्रियता का परिचय दिया। आश्रम को क्लीन चिट दे दी और झूठे आरोप लगानेवालों के मुँह पर करारा तमाचा जड़ दिया।''

४ से १४ दिसम्बर के दौरान **देहरादून, ऋषिकेश व हरिद्वार आश्रम** में पूज्यश्री का एकांतवास रहा। इस समय पूज्य बापूजी अपने व्यापक चैतन्यस्वभाव में गोता लगाकर विश्वमांगल्य के लिए सूक्ष्म सृष्टि में रत रहते हैं। एकांतवास के दौरान ब्रह्मानंद की मस्ती से छके पूज्य बापूजी जब अपनी अलमस्ती, फकीरी मस्ती को जिज्ञासुओं पर उड़ेलते हैं, तब वे अंतर्यात्रा में तेजी से गति करने लगते हैं। हरिद्वार एकांतवास में जब बापूजी गंगा-किनारे ब्रह्मांडीय आभा को भी पार कर देनेवाले ॐकार मंत्र का जप साधकों को कराते थे तो वहाँ का वातावरण महाशक्तिशाली भगवद्-तरंगों से स्पंदित हो जाता था, जिसकी छटा पाना देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। परमात्मा में शांत होने से प्राप्त होनेवाली शाश्वत आत्मोपलब्धि से अवगत कराते हुए पूज्यश्री बोले : ''प्रवृत्ति से जो भी मिलता है वह नगण्य है, नश्वर है और परमात्मा में शांति से जो मिलता है वह अमूल्य है, शाश्वत है। परमात्मा शाश्वत है तो परमात्मा में शांत होने से शाश्वत सुख, शाश्वत ज्ञान उपलब्ध होता है।''

१५ दिसम्बर (सुबह) को बापूजी का दर्शन-सत्संग लाभ **मेरठ (उ.प्र.)** के भक्तों को मिला। **१५ दिसम्बर (शाम)** को बापूजी ने **गाजियाबाद (उ.प्र.)** के भक्तों के बीच पहुँचकर उन्हें आत्मानंद की मस्ती से सराबोर किया। **१६ से २१ दिसम्बर** तक पूज्यश्री का **रजोकरी-दिल्ली आश्रम** में एकांतवास रहा। □

✻ पूज्य बापूजी के आगामी सत्संग-कार्यक्रम ✻

दिनांक	स्थान	सत्संग स्थल	सम्पर्क
२५ से २७ दिसम्बर	सूरत (गुज.)	संत श्री आशारामजी आश्रम, जहाँगीरपुरा (ध्यानयोग शिविर एवं पूर्णिमा दर्शन)	(०२६१) २७७२२०१-०२
२८ से २९ दिसम्बर (दोपहर तक)	दिल्ली (पूर्व)	उत्सव ग्राउंड, पटपड़गंज, यमुनापार (पूर्णिमा दर्शन एवं सत्संग)	९८१०१६५८९४, ९८१००४६०९८
३० दिसम्बर से १ जनवरी	मुंबई	बी.एम.सी. ग्राउंड, बोरीवली (पश्चिम)	९७०२८१८८५३, ९८२०३०२६२७
११ से १४ जनवरी (सुबह)	अहमदाबाद (गुज.)	संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद (उत्तरायण ध्यानयोग साधना शिविर)	(०७९) ३९८७७७८८, २७५०५०१०-११
१४ (दोप.) से १७ जनवरी	प्रयाग कुम्भ २०१३	सेक्टर ६, बक्शी बाँध, प्रयाग स्टेशन के पीछे	९४५०५७९७२१, ९३०५०१५४२०
२५ (शाम ६) से २८ फरवरी	राजिम, रायपुर (छ.ग.)	राजिम कुम्भ मेला परिसर (सत्संग एवं पूर्णिमा दर्शन)	७८०३०१३७७१, ७८०३०१३७७२

जम्मू

जहाँ बापूजी वहाँ नित्य उत्सव, नित्य चैतन्य-कुम्भ...

कूटा (जम्मू-कश्मीर)

बड़ौदा

पूर्णिमा दर्शन-सत्संग

नई दिल्ली

अखनूर (जम्मू-कश्मीर)

सुमेरपुर (राज.)

१४ फरवरी 'मातृ-पितृ पूजन दिवस'

आप कहते हैं...

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2012

''पूज्य संत श्री आशाराम बापूजी 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' की पावन परम्परा के सूत्रधार हैं। 'शिक्षा मंत्रालय' और 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' के माध्यम से मातृ-पितृ पूजन दिवस 'राष्ट्रीय पर्व' के रूप में घोषित होना चाहिए।'' **– श्री सुमेरुपीठ (काशी) के शंकराचार्य जगद्गुरु स्वामी नरेन्द्रानंद सरस्वतीजी**

''मुझे पूरा विश्वास है कि बापूजी हमें एक नयी दिशा दिखा रहे हैं।'' **– महामंडलेश्वर स्वामी देवेन्द्रानंदजी गिरि, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतीय संत समिति**

''यह पुनीत व पुण्य शुरुआत है। हम तहेदिल से आपका समर्थन, आपका सहयोग और हृदय से वंदन करते हैं।'' **– श्री कल्कि पीठाधीश्वर प्रमोद कृष्णम्जी, अध्यक्ष, उत्तर भारत, अखिल भारतीय संत समिति**

''हम लोग 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनायें तो यह दिवस एक महाकुम्भ बनकर हमारे घर में हमेशा-हमेशा के लिए विराजमान हो जायेगा।'' **– संत श्री देवकीनंदन ठाकुर**

''यह मातृ-पितृ पूजन दिवस समूचे हिन्दुस्तान में नये इतिहास का सृजन करेगा।'' **– जैन समाज के आचार्य युवा लोकेश मुनिश्रीजी**

''बापूजी जैसे संतों का बहुत महत्त्व है। 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' भारतवर्ष में और पूरे विश्व में मनाया जायेगा।'' **– 'सनातन संस्था' के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री अभय वर्तक**

''मैं १४ फरवरी को कर्नाटक में १०० जगहों पर हजारों युवक-युवतियों से 'मातृ-पितृ पूजन' कार्यक्रम करवाऊँगा।'' **– 'श्रीराम सेना' के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रमोद मुतालिक**

''परम पूज्य बापूजी के द्वारा मिली इन शिक्षाओं से हम अपने जीवन को सुंदर बनायेंगे।'' **– प्रसिद्ध गायक श्री अनूप जलोटा**

''माता-पिता पूजन दिवस बहुत ही अच्छा प्रयास है। आजकल के युवक-युवतियों को इसका महत्त्व बताना बहुत जरूरी है।'' **– प्रसिद्ध गायिका अनुराधा पौडवाल**

''भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि श्री योग वेदांत सेवा समिति द्वारा भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने हेतु वैश्विक स्तर पर प्रतिवर्ष १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन अभियान चलाया जा रहा है और इस कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार हेतु 'मातृ-पितृ पूजन' पुस्तक का भी प्रकाशन किया जा रहा है। राष्ट्रपतिजी इस अभियान तथा 'मातृ-पितृ पूजन' पुस्तक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।'' **– वेणु राजामणि, राष्ट्रपति के प्रेस सचिव**

''हमारे भविष्य की पीढ़ी के ऊपर अच्छे संस्कार हों – इस उदात्त भावना से पूज्य बापूजी ने 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का अभियान हाथ में लिया है।'' **– श्री नितीन गडकरी राष्ट्रीय अध्यक्ष, भा.ज.पा.**

''पूज्य बापूजी का पूरे विश्व में मातृ-पितृ पूजन का आह्वान करोड़ों बच्चों का ओज-तेज, आत्मबल बढ़ायेगा व चहुँमुखी उन्नति करेगा।'' **– श्री पवन कुमार बंसल, केन्द्रीय रेलमंत्री**

''संस्कार धरोहर का संरक्षण-संवर्धन करने हेतु हर वर्ष १४ फरवरी को पूरा छत्तीसगढ़ राज्य 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनायेगा।'' **– डॉ. रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़**

''मातृ-पितृ पूजन अभियान अविरत चलता रहे। मैं इस पुस्तक के वितरण की निर्बाध सफलता हेतु शुभकामनाएँ देता हूँ।'' **– श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, मुख्यमंत्री, हरि.**

''मातृ-पितृ पूजन दिवस निश्चित तौर पर बहुत ही अच्छी बात है।'' **– मुख्तार अब्बास नकवी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भा.ज.पा.**

''मैं 'मातृ-पितृ पूजन' की इस अभूतपूर्व पहल के लिए पूज्य बापूजी का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।'' **– श्री जगन्नाथ पहाड़िया, राज्यपाल, हरियाणा**

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. ✲ Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. ✲ Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.